लक्ष्मीनारायण लाल

मिस्टर अभिमन्यु

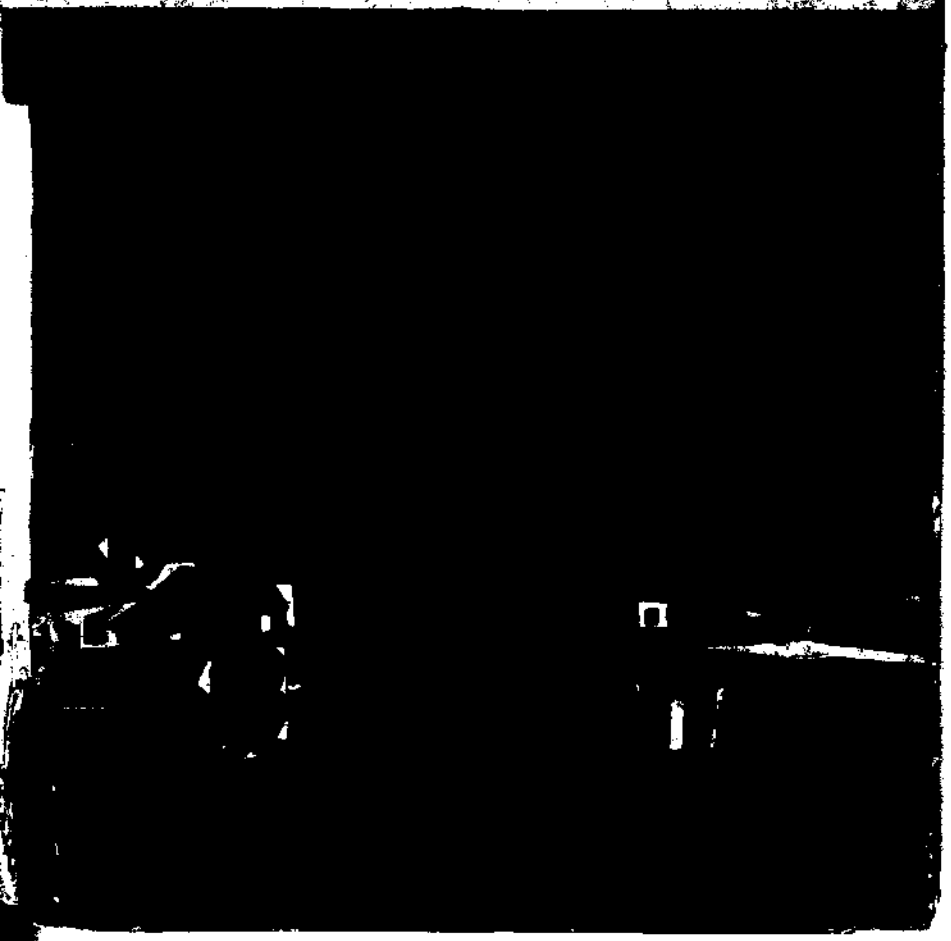

मिस्टर अभिमन्यु

लक्ष्मीनारायण लाल

© १९७१, डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल

प्रिय डॉक्टर सुवीर दत्ता रे
के लिये

मूल्य	चार रुपये
प्रथम संस्करण	१९७१
आवरण	नीला चटर्जी
प्रकाशक	नेशनल पब्लिशिंग हाउस २३, दरियागंज, दिल्ली-६
मुद्रक	राज कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-३२

MISTER ABHIMANYU (Drama) : Lakshmi Narain Lal Rs. 4.00

भूमिका

'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक का नायक या कि प्रतिनायक मिस्टर राजन अपने होने की शर्त पूरी नहीं कर पाता, 'बाहर' निकलना चाहता है। ढाई हजार वर्ष पहले लिखे गये महाभारत का अभिमन्यु भी बाहर निकलना चाहता है—उसे प्रवेश करना सिखाया गया था, बाहर निकलना नहीं। लेकिन महाभारत के अभिमन्यु और डा० लक्ष्मीनारायण लाल के अभिमन्यु में, जिसे 'मिस्टर अभिमन्यु' कहकर उन्होंने विडम्बना को उजागर कर दिया है, एक बुनियादी फर्क है। अभिमन्यु सचमुच ही बाहर निकलना चाहता था, जिसके लिए उसने सच्ची लड़ाई लड़ी थी और वह मारा गया था, लेकिन मिस्टर अभिमन्यु बाहर निकलना नहीं चाहता—उसे केवल भ्रांति है कि वह बाहर निकलना चाहता है। इस भ्रांति को बनाये रखने के लिए वह एक लड़ाई भी लड़ता है, जो झूठी नहीं, सच्ची लड़ाई है—केवल इतना है कि वह एक अनिर्णय में पड़े व्यक्ति की लड़ाई है, उस व्यक्ति की नहीं जो निर्णय ले चुका हो। अभिमन्यु की पराजय में ही उसकी जीत निहित थी, मिस्टर अभिमन्यु की हार केवल हार है; वह आधुनिक व्यक्ति की त्रासदी और विडम्बना की तत्सम अभिव्यक्ति है, जिसकी मृत्यु महान नहीं और जिसका जीवन पराक्रम नहीं। एक तरह से शौर्य और महानता का युग समाप्त हो चुका है, केवल निजी लड़ाइयाँ बची हैं, जिन्हें महाकाव्य के स्तर पर नहीं, बल्कि गुमनाम सभ्यता में अपने व्यक्तित्व और निर्णय की सर्वथा निजी तलाश के स्तर पर लड़ा जा सकता है।

इस नाटक के अभिनय-प्रदर्शन, नाट्य-पाठ, अनुवाद, प्रसारण तथा फिल्मीकरण आदि के लिये लेखक की लिखित पूर्व-अनुमति अनिवार्य है।

जिस सभ्यता का निर्माण आज़ाद हिन्दुस्तान ने पिछले वर्षों में किया है, जिसके प्रतीत हैं पूँजीपति केजरीवाल, सरमायेदारी का राजनैतिक प्रवक्ता गयादत्त, कलेक्टर राजन के दुनियादार पिताजी और मूल्यों की दुनिया से अनभिज्ञ उनकी पत्नी, भ्रष्ट अफसर, मन्त्री और पुलिस और सबसे अधिक स्वयं राजन। हर व्यवस्था अंततः एक षड्यंत्र में परिणत होती है। भारत की मौजूदा समाज-व्यवस्था एक ऐसा षड्यंत्र है, जिसके बाहर निकलने का रास्ता आसानी से नज़र नहीं आता और जिसके भीतर रहते हुए दम घुटता है। राजन की त्रासदी वहाँ से शुरु होती है, जहाँ वह यह अनुभव करता है कि वह इस षड्यंत्र में शामिल है। देश में हज़ारों अफसर, लाखों कर्मचारी, सैकड़ों हुक्काम हैं, जो आजीवन दूसरों का गला काटते और पाप की जय-पताका फहराते और मनुष्य के अपमान की नयी से नयी तरकीबें ईजाद करते हैं। मगर उन्हें कभी यह बोध नहीं होता कि वे कुछ गलत कर रहे हैं। उन्हें उत्तराधिकार के रूप में दरअसल यही मिला है। उन्हें यही बुद्धि और यही नैतिकता दी गई है। उन्हें आत्मरक्षा के लिए यही अस्त्र भी दिया गया है। उन्हें यही अन्तरात्मा मिली है।

राजन उन्हीं में से एक होता हुआ भी उनसे भिन्न है। उसका कैरियर उसके पिता ने उसके लिए चुना है। उसका मुहावरा शिक्षा-संस्थाओं ने उसके लिए बनाया है। उसके कपड़े, उसकी पत्नी ने उसके लिए चुने हैं। उसका सब कुछ दूसरों ने उसके लिए चुना है। कुछ भी ऐसा नहीं, जिसे वह निजी कह सके। केवल एक ही चीज़ उसे दूसरों से भिन्न बनाती यानि बनने की प्रेरणा देती है—वह है उसका एहसास।

औरों की ज़िन्दगी में यह सवाल अक्सर नहीं उठता कि क्या उनकी अपनी कोई नियति है? क्या वे केवल व्यवस्था के होकर रह जायेंगे? राजन की ज़िन्दगी में यही सवाल एक अनोखे ढंग से पैदा होता है। एक दिन उसे यह पता चलता है कि उसकी तरक्की हो गयी है और जिन कारणों से वह तरक्की हुई है, वे उसके पैदा किये हुए कारण नहीं हैं। उसे पता चलता है असंस्कृत, मर्यादाहीन गयादत्त के, जिससे उसे जुगुप्सा होती है, उपचुनाव में जीतने का पुरस्कार उसे दिया जा रहा है, उसे कलेक्टर से कमिश्नर बनाया जा रहा है, और वह एक बहुत बड़ी साज़िश में फंसाया जा रहा है—हालांकि उसकी जीत के लिए वह कतई जिम्मेदार नहीं है। दूसरे शब्दों में उसे षड्यंत्र में, जो घट चुका है, शामिल किया जा रहा है। राजन के व्यक्तित्व का संकट इसी बिन्दु से शुरु होता है और उसकी लड़ाई थोड़ी दूर चलकर सहसा समाप्त हो जाती है। समग्र व्यवस्था से लड़ने का उपक्रम करता हुआ वह अचानक अपने ही भीतर के एक चौदह वर्षीय किशोर (राजन) से पूरी तरह पराजित हो जाता है। दरअसल राजन एक अभिशप्त व्यक्ति है। वह त्यागपत्र देना चाहता है पर देता नहीं, वह केजरीवाल का गोदाम सील करता है, पर आदेश की अवहेलना नहीं कर पाता। वह व्यवस्था को नापसन्द करता है, पर उसे तोड़ नहीं पाता। वह व्यवस्था के बाहर नहीं आता। बाहर आने के अपने खतरे हैं। भीतर घुटन है, मगर सुरक्षा भी है। बाहर मुक्ति है, लेकिन मृत्यु भी है।

यह संदिग्ध है कि क्या सचमुच ही राजन बाहर आना चाहता था, या कि उसका सारा 'विद्रोह' एक अभिजात की सौंदर्य-विलासितामात्र थी। उसे गयादत्त से नफरत क्यों होती है? क्या इसलिए कि गयादत्त शोषण और सरमायेदारी का पोषक है या इसलिए कि गयादत्त एक फूहड़ व्यक्ति है? इस संदेह का कारण है, राजनीति के प्रति राजन की वितृष्णा।

अगर राजन गयादत्त की राजनीति का विरोधी होता तो उसकी नियति भी सम्भवतः कुछ और होती। तब वह बाहर आ भी सकता था। मगर गयादत्त की राजनीति का विरोधी राजन

नहीं, आत्मन है। गयादत्त से और उसके माध्यम से केजरीवाल से वास्तविक लड़ाई राजन नहीं, आत्मन लड़ रहा है। ज़िन्दगी राजन की नहीं, आत्मन की खतरे में है। मारा राजन नहीं, आत्मन जाता है।

वैसे आत्मन की मृत्यु राजन की मृत्यु है। फैंटेसी का इस्तेमाल करते हुए डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल ने आत्मन और राजन के रिश्ते को बहुत कारीगरी के साथ तय किया है :

"राजन : तुम हँस पड़े न। तुम मुझे नहीं जानते।

आत्मन : कैसे जानता···तुम इधर नौकरी में आये, मैं उधर राजनीति में छुट गया। तुम इधर जी-जान से घर-गृहस्थी सजाने लगे, दिन-रात नौकरी करते रहे, मैं उधर विरोध में जा फंसा··· रास्ते में कई बार देखा था, तुम मुझसे आँख बचाये भागे चले जा रहे थे···"

कहने की जरूरत नहीं कि आत्मन राजन के व्यक्तित्व का वह अंश है जो उसी दिन उससे छुट गया, जबकि राजन ने अफसरी का निर्णय लिया। गयादत्त भी राजन के ही व्यक्तित्व का दूसरा अंश है। राजन आत्मन हो सकता था, मगर वह कभी भी आत्मन न हो सका। उसके इस हिस्से का गयादत्त पूरी तरह संहार कर देता है। आत्मन मारा जाता है, गयादत्त की पिस्तौल से, मगर उसकी मृत्यु प्रसिद्ध होती है राजन के विवेक में, राजन द्वारा की गई हत्या के रूप में।

रूपक का प्रयोग केवल रूपक के लिए न करते हुए लक्ष्मीनारायण लाल ने राजन के अन्तःसंघर्ष को, जो कि आज के अभिमन्यु का साक्षात् चक्रव्यूह है, उसकी समग्रता में उपस्थित कर हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी की त्रासदी को और भी गहरा कर दिया है।

मिस्टर अभिमन्यु के माध्यम से उठाया गया प्रश्न, समसामयिक बहुत से नाटकों की बुनियाद से ज्यादा संगत और सार्थक है। वह बहुत से लोगों का, शायद हम में से प्रत्येक का प्रश्न हो सकता है। क्या हम भी किसी ऐसे चक्रव्यूह में नहीं घिरे हुए हैं जिससे बाहर निकलने की पर्याप्त इच्छा और संकल्प हमारे पास नहीं है! हमारी त्रासदी यह नहीं कि हम अभिमन्यु हैं, बल्कि यह है कि हम अभिमन्यु नहीं हैं। हम मिस्टर अभिमन्यु हैं।

चक्रव्यूह हर युग का अपना होता है, अभिमन्यु सभी युगों का एक ही होगा। अगर वह मूल अभिमन्यु नहीं तो फिर वह केवल मिस्टर अभिमन्यु ही हो सकता है। अश्वत्थामा की तरह अभिमन्यु भी अमर और अद्वितीय है।

पौराणिक चरित्र को नये मंत्र पर पेश करना अपने आप में एक चमत्कारिक कृत्य हो सकता है। मगर किसी पौराणिक चरित्र के मूल अर्थ को एक नये संदर्भ में रखकर अपने समय की विडम्बना को उद्घाटित करना ज्यादा कठिन काम है। पश्चिमी रंगमंच ने इस शताब्दी में, बहुत हद तक यह महत्त्वपूर्ण काम किया है। ऐसा करते हुए उसने दो युगों की स्थितियों के अन्तर और फासिले को साफ किया है। मिस्टर अभिमन्यु भी यह फासिला सामने रखता है। वह अपने समय पर टिप्पणी करता हुआ यह घोषणा करता है कि उसकी त्रासदी बिलकुल आज की त्रासदी है। उसके सवाल बिलकुल आज के सवाल हैं। कोई और युग, कोई और आख्यान, कोई और चिकित्सा उसकी सहायता नहीं कर सकती। उसकी मृत्यु बिलकुल आज की मृत्यु है। उसका चक्रव्यूह बिल्कुल आज का चक्रव्यूह है।

आज की कोई कृति, जो कि आज के बौद्धिक प्रश्न और मानवीय संकट से नहीं जूझती, मूल्यांकन के योग्य नहीं मानी जा सकती। नाटक पर यह बात खास तौर से लागू होती है क्योंकि कविता अरण्यरोदन भी हो सकती है, नाटक केवल संवाद ही हो सकता है। संवाद किस बात को लेकर? अगर संवाद के पीछे कोई बेचैनी,

संकट और उत्सुकता नहीं तो वह केवल एक मनोविलास होगा, मनोरंजन होगा।

हिन्दुस्तानी रंगमंच की पिछले कुछ वर्षों की सबसे बड़ी घटना है यह एहसास कि नाटक अपने समाज से प्रश्न करने का सबसे सार्थक और साक्षात् माध्यम है। कम से कम बंगला, मराठी, कन्नड़ और हिन्दी के बारे में यह बात दावे के साथ कही जा सकती है। यह जरूर है कि हिन्दी में यह एहसास औरों की तुलना में कुछ कम है। मिस्टर अभिमन्यु नाटक का महत्त्व इसलिए और भी बढ़ जाता है कि वह इने-गिने नाटकों में से है, जो प्रश्न करने के साहस को और बढ़ाते तथा उसकी जरूरत को अनिवार्यता में परिणत करते हैं।

—श्रीकांत वर्मा

'मिस्टर अभिमन्यु' का पहला प्रस्तुतीकरण 'संवाद' द्वारा सत्यमूर्ति ऑडीटोरियम, नई दिल्ली में ११, १२, १८, १९ जनवरी, १९६९ को हुआ।

भूमिकाएँ

राजन : दिनेश

विमल : माधवी मंजुला

आत्मन : सुधीर आहुजा

गयादत्त : गोपाल माथुर

श्रीमती राठौर : सुषमा शर्मा

श्री : राजेश रायजादा

निर्देशक

वीरेन्द्र नारायण

मिस्टर अभिमन्यु

चरित्र

राजन
विमल
आत्मन
गयादत्त
पिताजी
श्रीमती राठौर
श्री और कुछ लोग

पहला अंक

पहला दृश्य

कलक्टर मिस्टर राजन के बँगले का बाहरी कमरा। पीछे, भीतर जाने का दरवाजा। दरवाजे से दायीं ओर एक ऑफिस टेबुल और तीन-चार कुर्सियाँ। टेबुल पर टाइपराइटर, कागज-पत्र आदि रखे हैं। इससे आगे, किनारे दायीं ओर नीची टेबुल पर फोन रखा है।

बायीं ओर, सोफे के सिर्फ दो अदद रखे हैं—बीच में टेबुल। उस पर अखबार, ऐश-ट्रे वगैरह रखे हैं। इस सोफा के पीछे दीवार से सटा हुआ एक बुकशेल्फ रखा है। इसमें किताबें, बच्चों के कुछ खेल-खिलौने भी रखे हैं। ऊपर एक टूटी हुई छोटी-सी पत्थर की मूर्ति और फूलदान रखा है।

दर्शकों पर से प्रकाश बुझते ही मिस्टर अभिमन्यु का एक विशेष संगीत उस अँधेरे में कुछ क्षणों तक तिरता है। सहसा राजन पर प्रकाश आते ही संगीत टूट जाता है। वह सोफे पर बैठे किसी फाइल में डूबे हैं। फाइल रखकर तेजी से उठते हैं। ऑफिस टेबुल पर जाते हैं। वहाँ दो-एक कागज देखते हैं। टाइपराइटर पर चढ़ा हुआ कागज देखते हैं। बुकशेल्फ के पास आते हैं। उसमें से एक किताब निकालते हैं। उसके पृष्ठ उलटते-उलटते सहसा ध्यान

उस टूटी हुई मूर्ति पर जाता है। उसे लेकर एकटक निहारते हैं। हल्की-सी हँसी आ जाती है। रख देते हैं। दूसरी किताब ढूँढ रहे हैं। भीतर से विमल आती हैं।]

विमल : सुनिये।

[राजन तेज़ी से एक किताब बन्द करते हैं।]

विमल : देखिए दस बज गये।

[राजन कोई कागज़ फाड़ते हैं।]

विमल : मुझे बताइये मैं कुछ···

[बच्चे का 'लौहतरंग' खिलौना गिरता है। विमल बढ़कर उठा लेती हैं। पर राजन उसे छोड़ते नहीं। लेकर उसे तेजी से छेड़ते हैं और मूर्ति के पास रख देते हैं।]

विमल : क्या बात है ?

[बढ़कर सोफे परसे फिर वही फाइल उठा लेते हैं। विमल लौह तरंग खिलौने को बड़े आहिस्ता-आहिस्ता बजाने लगती है। एक बिन्दु पर आकर राजन उस फाइल को ज्यों-की-त्यों फाड़ डालना चाहते हैं। फाड़ने के संघर्ष में वह भीतर चले जाते हैं। दायीं ओर से श्री आता है।]

श्री : हुजूर, साहब के पिताजी आये हैं।

विमल : सच !

[पिता जी का प्रवेश। विमल चरण स्पर्श करती हैं।]

पिता : सौभाग्यवती रहो···सब ठीक-ठाक। ···रज्जन कहाँ है ?

विमल : अन्दर आइये।

पिता : (सोफे पर बैठते हुए) यह क्या सुन रहा हूँ, बहू ?

विमल : साहब को बोलो, पिताजी आये हैं।

[श्री अन्दर जाता है।]

पिता : बेठो ···क्या बयान करूँ, वकालत खाने से घर पहुँचा ही था, केजरी-वाल मिल का मैनेजर गाड़ी लिये हुए दरवाज़े पर हाजिर···उसने जो रिपोर्ट दी, मैं घबरा गया। कहाँ मैं खुशियाँ मना रहा था, मेरा रज्जन कलक्टर से कमिश्नर हो गया। मैंने वहाँ लोगों को दावतें दीं···और एकाएक कल यह खबर कि यह नौकरी से इस्तीफा दे रहे हैं, मेरे पैर के नीचे से जैसे ज़मीन खिसक गयी ···बहू, बात क्या है ? मुझे साफ-साफ बताओ।

विमल : मैं खुद हैरान हूं। मुझे भी कुछ नहीं मालूम।

[श्री आता है।]

श्री : साहब आ रहे हैं। (बाहर जाता है।)

विमल : बहुत अच्छा हुआ आप आ गये···कल ही आपको ट्रंककाल करवाने वाली थी।

[राजन का प्रवेश।]

राजन : (हाथ जोड़कर निःशब्द नमस्कार)

पिता : खुश रहो···आओ। बेटे, मैं यह क्या अफवाह सुन रहा हूँ ?

[सन्नाटा]

राजन : आप जानते हैं पिताजी, मैं शुरू से ही नौकरी के खिलाफ था···

पिता : हाँ···

राजन : पर आपकी इच्छा और आज्ञा थी—आपका लड़का आई० ए० एस० में आये। वह कलक्टर-डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट हो। अब वह बात भी पूरी हो गयी।

पिता : (हँसते हैं) भई, अभी तो बात बनी है···

राजन : क्या ?

पिता : बेटे, मैं एक बुनियादी बात कह रहा हूँ।

राजन : मैं भी वही बुनियादी बात कह रहा हूँ। मैं अब इस नौकरी से बाहर निकल रहा हूँ।

[विराम]

राजन : पिछले दिनों यहाँ मंत्रीजी आये थे।

पिता : हाँ, अखबार में पढ़ा था।

राजन : 'बाई एलेक्शन' में सरकारी पार्टी के उम्मीदवार गयादत्त की जो जीत हुई है, मंत्रीजी ने मुझसे कहा, "पार्टी को ज़रा भी उम्मीद न थी कि हमारी जीत होगी, पर मिस्टर राजन, आपकी मदद ने जो कमाल दिखाया, हमें उससे बेहद खुशी हुई···आपका कमिश्नर होना मुबारक हो।" उनका मतलब था, 'बाई एलेक्शन' में मैंने बेईमानी की है और यह कमिश्नरी मुझे उसी के इनाम में दी गयी है··· 'दिस इज समथिंग हॉरिबुल'।

पिता : उनके कहने से क्या होता है···

राजन : अब उन्हीं के कहने से सब होता है।

पिता : पर तुम अपनी जगह पर हो।

राजन : नहीं, यहाँ हर आदमी जैसे एक-दूसरे के रास्ते पर खड़ा है। मैं खुद खड़ा हूँ दूसरे के रास्ते पर। यह नौकरी किसी और की थी···

[विराम]

राजन : इसके बाद मंत्री महोदय ने बेहद इतमीनान से कहा—"मिस्टर राजन, आपके काम से हमें बहुत खुशी है, तभी आपको इतनी 'इम्पार्टेन्ट' कमिश्नरी का चार्ज दिया जा रहा है। आने वाले जनरल एलेक्शन के लिये वहाँ से आपको बारह लाख रुपयों का इंतज़ाम करना है।"

[विमल तेजी से अन्दर जाती हैं। राजन सोफे पर बैठते हैं। विमल गिलास भरा पानी ले आती हैं। राजन पानी पीते हैं।]

विमल : पिताजी, अन्दर ड्राइंग-रूम में आइए।

पिता : सारा केस समझ गया।

[राजन सूनी निगाह से पिता को देखते रह जाते हैं। विमल अन्दर जाती हैं।]

पिता : और यह केजरीवाल का क्या 'केस' है ?···सुना है, केजरीवाल को इस कमरे से बाहर निकाल दिया ! अभी पिछले दिनों गयादत्तजी हमारे यहाँ एक स्कूल का उद्घाटन करने आये थे, तब उन्होंने बताया था। केजरीवाल के सारे फायर आर्म्स भी ज़ब्त

कर लिये ?

राजन : मुझे खासतौर से इस बिगड़े हुए ज़िले में भेजा गया था। दिन-रात एक कर, इस ज़िले को सम्हाला, मगर केजरीवाल साहब···

पिता : भई, वह काफी पहुँच के आदमी हैं··· उनकी शाखें भी बहुत हैं।

राजन : तभी पिछले तेरह वर्षों से एक पैसा भी टैक्स नहीं दिया। हर कलक्टर आया, और इस फाइल में कुछ और पेज जोड़कर चला गया।

[पिताजी के हाथ में वह मोटी फाइल थमा देते हैं।]

राजन : मैंने एक्शन लिया। यह देखिए··· यह देखिए··· यह मेरी ज़िम्मेदारी थी कि सारे टैक्स वसूल किये जाएँ।

पिता : तुम्हें भी वैसे ही करना चाहिए था। (उठ जाते हैं। कोट-टाई वगैरह उतारते हुए) मेरा मतलब जैसा ज़माना हो, उसी के मुताबिक चलना चाहिए। आखिर और लोग भी तो आये थे। वह बात और है कि तुम अपनी ईमानदारी और बेदाग़ हुकूमत के लिये पूरे सूबे में मशहूर हो।

यह मेरे लिये फख्र की बात है। मगर अब यह तुम्हारी शान के खिलाफ है कि एक मामूली बात पर ऐसी नौकरी से 'रिज़ाइन' कर दो। लोग क्या कहेंगे!

राजन : मुझे कोई परवाह नहीं।

पिता : मगर हमें तो है। तुम्हारा नाम··· तुम्हारी घर-गृहस्थी, सबका फ्युचर, सबका दुःख-सुख··· हम सब लोग···

राजन : सब लोग ?

पिता : मेरा मतलब, ऐसा होता ही है, इसमें परेशान होने की कोई बात नहीं।

राजन : (उठते हुए) आदमी से कलक्टर हो जाना यह आपकी लड़ाई थी; ज़िन्दगी में आप वकील थे। कलक्टर आपके लिये ईश्वर था।

[भीतर से विमल का प्रवेश]

विमल : आइये, नाश्ता तैयार है।

राजन : (चुप हैं।)

पिता : आओ, बेटे···

राजन : कर चुका हूँ··· किसी को बुला रखा है।

[विमल के संग पिताजी भीतर जाते हैं। राजन फिर वही, फाइल, कागज़ात देखने लगते हैं। श्री आता है।]

श्री : हुजूर, आत्मन साहब तशरीफ ले आये हैं।

राजन : बाहर बैठाओ।

[कागज़ात देखने में डूबे हैं। भीतर से विमल आती है।]

विमल : अन्दर आकर एक मिनट पिताजी का साथ तो दे दो!

राजन : दो न।

विमल : एक मिनट के लिये अपना काम रोक नहीं सकते ?

राजन : (चुप हैं।)

[विमल अन्दर जाती है।]

राजन : (कुछ क्षणों बाद) श्री, आत्मन साहब को भेजो।

[आत्मन का प्रवेश]

राजन : गयादत्त जी कहाँ हैं ?

आत्मन : मुझे क्या मालूम ?

राजन : आप दोनों को एक संग बुलाया था।

आत्मन : खैरियत तो···

राजन : आप दोनों के सामने मुझे यह जानना है कि आपके 'बाई एलेक्शन' में मैंने गयादत्त जी के लिये क्या बेइमानी

को !

आत्मन : यह वही बता सकते हैं ।

राजन : मिस्टर आत्मन, आप-जसे पढ़े-लिखे लोगों को इस जलील पॉलिटिक्स में नहीं आना चाहिए ।

आत्मन : यानी नौकरी करनी चाहिए ?

राजन : नौकरी को राजनीति ने गंदा किया ।

आत्मन : राजनीति को भी नौकरशाहो ने बेहूदा बनाया । यहाँ इस तरह नौकरी की परिकल्पना अंग्रेज़ों की थी । गुलामों पर गुलामों से शासन कराना और ज़िन्दगी की सहज धार को हर मोड़ पर लाल फीते से बाँध देना ।

राजन : वहीं से आपकी राजनीति भी तो आयी है ।

आत्मन : सब कुछ वहीं से आया है ।

राजन : पर अब तो यहाँ अंग्रेज़ नहीं ।

आत्मन : मगर सत्ता का आधार वही है ।

राजन : आप इसे बदलते क्यों नहीं ! इत्ते बड़े 'लेबर लीडर' हैं और पिट गये गया-दत्त से ।

आत्मन : (हँसने लगता है ।) अजी, न जाने कित्ती बार पिटा हूँ । तब से आज कितने वर्ष

हो गये···दो-दो बार जनरल एलेक्शन में हारा, इस तीसरी बार 'बाई एलेक्शन' में । छः-सात बार जेल काट आया । टियर गैस, लाठी-चार्ज ···यह तो जैसे भोजन हो गया···और दरअसल वह असली बुनियादी काम वहीं का वहीं रह गया ।

राजन : वहीं का वहीं रह गया ?

आत्मन : बल्कि उस पर धीरे-धीरे ज़ंग चढ़ गया ।

[विराम]

राजन : पर आप तो सदा विरोधी दल में थे !

आत्मन : मगर उस विरोध की सीमा से कभी बाहर तो नहीं निकल सका । (हँसता है ।) और जिसके हम विरोधी हैं, उसने अपने आपमें ऐसी ताक़त पैदा कर ली है कि विरोध के हर रूप को वह हज़म कर लेता है···लगता है, वही हमारे विरोध का अब संचालन भी करता है ।

राजन : यह कहते आपको शर्म नहीं आती !

[आत्मन हँस रहा है ।]

राजन : राजनीति एक दर्शन थी, मनुष्य को श्रेष्ठ और सुन्दर बनाने के लिये ।

तुम्हारी आज की राजनीति उसी मनुष्य को बरबाद कर सिर्फ वही सत्ता और 'लग्ज़री' हथियाने का 'शॉर्टकट' है।

आत्मन : यह आप कह रहे हैं !

राजन : हर चीज़ आगे चलकर अपनी बुनियाद से हट जाती है।

आत्मन : दिस इज़ हिस्ट्री।

राजन : दिस इज़ पॉलिटिक्स।

[विराम]

श्री : (आकर) हुजूर, गयादत्त साहब आये हैं।

राजन : बैठाओ बाहर।

[श्री जाता है।]

राजन : आप और गयादत्त की लड़ाई का फायदा केजरीवाल उठाता है। मैं चाहता हूँ, यह फायदा खत्म हो।

आत्मन : चाहने और होने में इतना अन्तर है, कि हमें इतनी बातें करनी पड़ती हैं।

[विराम]

राजन : तो गयादत्त से कुछ कहना बेकार ही है, श्री··· (श्री आता है।) गयादत्त से बोलो, अब वक्त नहीं। तशरीफ ले जायँ···

गयादत्त : (प्रवेश कर) लेकिन मैं तो अब आ गया हूँ। मुझे देर हो गयी। जैसे ही चलने को हुआ, कुछ बहुत ज़रूरी लोग आ गये। आप तो जानते हैं, आज की जनता की कितनी-कितनी समस्याएँ हैं। कहिए साहब, आपकी पीठ का दर्द अब कैसा है ?

राजन : मैं इनसे कुछ ज़रूरी बातें कर रहा हूँ।

गयादत्त : आपको कुछ ज़रूरी बातें मुझसे भी तो करनी हैं।

राजन : अपनी घड़ी देखिये।

गयादत्त : ओह, इसकी मत पूछिए। (घड़ी में चाभी देने लगते हैं।) लेकिन मैं अब जाऊँगा कहाँ, आ जो गया हूँ।

आत्मन : और अंग्रेज़ों की तरह इनका विश्वास पक्का हो गया है, कि अब यह यहाँ से कभी नहीं जायेंगे।

गयादत्त : सुना है, पिताजी आये हैं। कहाँ हैं ? उनसे मेरी बड़ी पुरानी··· (हँसता है।)

आत्मन : (उठते हुए) अब मुझे इजाज़त दीजिये।

राजन : जा रहे हैं ?

गयादत्त : पिछले दिनों लाठी की चोट लगी है

बेचारे को, डॉक्टर ने 'कम्पलीट रेस्ट' के लिये कहा है।

आत्मन : देखिये न, इन्हें सब मालूम है। सिर्फ अपनी मौत का पता नहीं।

[आत्मन हँसते हुए तेज़ी से चले जाते हैं। इस बीच श्री ने टेबुल पर सारी फाइलों को ठीक से बाँधकर पीछे ऑफिस मेज़ पर रख दिया है और वहाँ तैनात खड़ा है।]

गयादत्त : सुना है आप बहुत परेशान हैं। उस दिन मंत्रीजी ने आपसे कुछ ऐसा-वैसा तो नहीं कह दिया! मेरा मतलब, ये लोग यूँ ही बहुत कुछ बक जाते हैं, क्या करें इनकी आदत जो हो गयी है।

[राजन अखबार पढ़ने लगे हैं।]

गयादत्त : आप तो इत्ते समझदार आदमी हैं, दरअसल पॉलिटीशियन की बातों को इस तरह सीरियसली नहीं लेना चाहिए···मेरा मतलब उनसे उलझना नहीं चाहिए।

[राजन पढ़ रहे हैं।]

गयादत्त : मेरा खयाल है, केजरीवाल के बारे में मंत्रीजी ने ज़रूर आपसे कुछ बातें की होंगी।

राजन : (देखते हैं।)

गयादत्त : ज़रूर की होंगी। यह कैसे हो सकता है!

राजन : 'हाऊ डज इट कन्सर्न यू'?

गयादत्त : मंत्रीजी ने मेरे सामने चीफ सेक्रेटरी को टेलीफोन किया है।

राजन : किया होगा।

गयादत्त : देखिये, मैं आपकी बड़ी इज्ज़त करता हूँ। मैं आपका एहसानमन्द हूँ। आपको नेक सलाह देता हूँ, आप यहाँ का सारा चक्कर यहीं छोड़कर ठाट से अपने नये पद पर जाइये।

राजन : धन्यवाद।

गयादत्त : श्री केजरीवाल बेहद नेक आदमी हैं। राष्ट्रीय संग्राम में उनकी···

राजन : (अखबार बन्द करते हुए) तभी पिछले तेरह वर्षों से उन्होंने टैक्स नहीं दिये। अब तक उन पर आठ लाख सोलह हज़ार रुपये टैक्स के बाकी हैं। ब्रिटिश राज ने उन्हें बिना किसी लाइसेन्स के फायर आर्म्स रखने का अधिकार दिया···यही है उनका राष्ट्रीय संग्राम···! (उठ खड़े होते हैं और जैसे इस कमरे से निकल जाना चाहते हैं।)

गयादत्त : फायर आर्म्स में क्या रखा है ? वह तो महज़ एक इज्ज़त की बात है ।

राजन : टैक्स न देना भी तो अब इज्ज़त की बात है !

गयादत्त : धीरे बोलिये···भीतर पिताजी होंगे, बाहर केजरीवाल का जनरल मैनेजर खड़ा है ।

राजन : मुझे पता है, मेरे भीतर-बाहर कौन-कौन खड़े हैं ।

गयादत्त : बात यह है कि मैं नहीं चाहता, आपसे ऊपर तक जाऊँ ।

राजन : ऊपर जाने के लिये ही तो आपका जन्म हुआ है । कान खोलकर सुन लीजिये···अब तक आपके दोस्त केजरीवाल की कॉटन मिल का गोदाम सील कर दिया गया होगा ।

गयादत्त : यह आपने क्या किया ?

राजन : अब आप जा सकते हैं ।

गयादत्त : पर क्या यह सच है ? (विराम) अगर यह सच है, तो मैं आपकी बेहतरी के लिये सलाह देता हूँ···यह ऑर्डर वापस लीजिये ।

राजन : गैरमुमकिन···

गयादत्त : आप सब सोच-समझ लीजिये ।

राजन : कायदे से बात कीजिये ।

गयादत्त : ठीक है ।

राजन : यह आपकी सरकार है । यह 'फुल कैबिनेट डिसीज़न' है कि तमाम बकाया टैक्स वसूल किया जाय । मैं एक तरह से आपकी ही आज्ञा का पालन कर रहा हूँ ।

गयादत्त : जनाब, आप आज्ञा और इच्छा के फर्क को नहीं समझते ।

[विराम]

गयादत्त : आप चाहते क्या हैं ?

राजन : आपसे मतलब !

गयादत्त : दरअसल मैं आपका ही आदमी हूँ, आप चाहे मुझसे मतलब रखें या न रखें ।

राजन : बंद कीजिये बकवास···मैं अकेला ही काफी हूँ ।

गयादत्त : आपको पता नहीं, आपने सब कुछ हमारे हाथों में सौंप दिया है ।

राजन : आपने भी सब कुछ हमारे हाथों में सौंप दिया है । हम कहीं भी एक फाइल दबाकर आपकी सारी योजना ठप्प कर सकते हैं ।

गयादत्त : हमें पता है ···फिर भी आपको मुझसे मदद लेनी चाहिए···

[दरवाज़े पर पिताजी दिखते हैं।]

गयादत्त : ओह ! वकील साहब···नमस्ते। मैं अभी आपको ही पूछ रहा था। कहिए, सब आनन्द-मंगल ?

पिता : सब मेहरबानी है···आप लोगों ने यहाँ क्या कर दिया ?

गयादत्त : क्या कर दिया ?

पिता : आपने झूठ-मूठ मंत्रीजी से···

गयादत्त : वकील साहब, आप तो इत्ता ज़माना देखे हुए हैं, वह बात इनकी बेहतरी के लिये की···आखिर तरक्की कैसे होती ! इतने काम, नाम, कब तक यहाँ वही क्लक्टर बने रहते···!

राजन : अच्छा हो आप लोग बाहर जाकर···

गयादत्त : आइए-आइए, मैं बताता हूँ···आपसे क्या कहूँ···

[दोनों बाहर जाते हैं। श्री भी जाता है।]

राजन : (फोन करते हैं।) एस० पी० साहब को देना···मिस्टर राठौर, वह हरिजन बस्ती वाले मामले में क्या हुआ ? हूँ···हूँ···निहायत सख्ती से काम लीजिये। ब्राह्मणों ने उनकी बस्ती फुँकवायी है··· कोई दलील नहीं।

सबको हिरासत में लीजिये···!

[इस बीच विमल भीतर से आकर सोफे पर बैठ गयी है।]

राजन : (दूसरा फोन) ए० डी० एम० साहब, वहाँ आप गये थे। जी हाँ···जी··· हाँ, वह आर्डर मैं खुद टाइप कर रहा हूँ ···स्टेनो की कोई ज़रूरत नहीं। पेशकार को बोल दिया है। जी··· जी हाँ, मैं यहाँ का अपना सारा काम पूरा करके ही जाऊँगा···कोई परवाह नहीं···जी हाँ, बिलकुल फैसला कर लिया है··· (टेलीफोन रखते हैं।)

विमल : मिसेज राठौर का टेलीफोन आया था। वह हमारी कार खरीदना चाहती हैं। हमें भी अब नयी कार लेनी चाहिए।

राजन : विमल, हमने अब तक क्या तैयारी की है ?

विमल : शुक्र है, आज पूछा तो···

राजन : तुम्हें याद है न, शादी से तीन दिन पहले की वह बात···मैंने कहा था— कलक्टर हो जाने के बाद इस नौकरी से बाहर आ जाऊँगा।

विमल : तुम कब की बातें करते हो !

राजन : मैं भी तब से वह भूल ही गया··· मुझे तब इतना नहीं पता था कि यहाँ हर मूल्य की जड़ में वही गुलामी है। आज्ञाकारी होना किसी ऐसे चक्रव्यूह में पैर रखना है···मुझे इस धोखे का पता नहीं था। अब बोलो, हमने यहाँ से जाने की क्या तैयारी की है ?

विमल : मैंने तैयारी की है।

राजन : सच।

विमल : कॉन्वेन्ट होस्टल में दोनों बच्चों को सारी फीस भेज दी है। 'प्रापर्टी डीलर' के हाथ कुछ पुरानी चीज़ें साढ़े चार हज़ार में बेच दी हैं। वहाँ पहुँचकर इस पूरी रकम में थोड़ा-सा ही और मिलाकर नयी मॉडेल···

राजन : वहाँ पहुँचकर ? कहाँ···?

विमल : अपनी कमिश्नरी में।

राजन : ओह !

विमल : इन्श्योरेन्स एजेन्ट को बुलाकर कह दिया है—हम एक पॉलिसी और लेंगे। बैंक के सारे एकाउन्ट्स के कागज़ात मँगा लिये हैं, और बैंक को लिख भी दिया है।

राजन : मैं इस तैयारी की बात नहीं कर रहा था। मैं इसी में से बाहर निकलने को···

विमल : आप इन फिजूल बातों में···

राजन : फ्रिज, कार, इन्श्योरेन्स, स्टेटस— आखिर किसलिये, क्यों ?

विमल : फिर इस नौकरी में क्यों आये ?

राजन : आना पड़ा।

विमल : आना पड़ा···!

राजन : विमल !

विमल : जो जहाँ है, वहाँ से निकलने का ढोंग इसलिये करता है कि वह अपने को स्वयं से बड़ा साबित करना चाहता है।

राजन : (निरुत्तर)

[फोन की घंटी।]

विमल : हेलो···ट्रंककाल···चीफ सेक्रेटरी के यहाँ से···लीजिये, बात कीजिये साहब से।

राजन : नमस्ते···जी हाँ···सही है···गोदाम सील करा दिया है। फायर आर्म्स भी···जी···जी···आपको याद होगा, खासतौर पर मुझे इस ज़िले का चार्ज दिया गया था···आपके सीक्रेट

आर्डर्स भी हैं मेरे पास। जो···मैं औरों की तरह कैसे होता। जो··· जो···आप आर्डर कीजिये, सब हो जायेगा। जो नहीं, वह मैं हर्गिज़ नहीं कर सकता। (टेलीफोन रख देते हैं।)

विमल : जैसी सरकार होगी, हमें उसी तरह रहना होगा। हमें भी अपना फर्ज़ पूरा करना चाहिए।

राजन : सबने यही कहा है।

विमल : तुम्हें 'कम्पलीट रेस्ट' की ज़रूरत है।

राजन : 'यस···आई विल रिज़ाइन'।

विमल : 'रिज़ाइन' करने के लिये कोई ठोस बहाना चाहिए।

राजन : बहाना नहीं, संकल्प।

विमल : आप एकाएक क्यों इस तरह 'रिज़ाइन' करना चाहते हैं, लोग क्या कहेंगे ?

राजन : मेरा ऐसा कोई दुश्मन नहीं।

विमल : हर ज़िन्दगी के साथ दुश्मन अपने आप पैदा हो जाते हैं, ज़िन्दगी की बनावट ही ऐसी है।

राजन : तुम ठीक पिताजी की तरह बातें करती हो। (विमल चुप हैं।) जो आया

है, वह जा भी सकता है। मैंने कभी किसी के साथ कोई बेइन्साफी नहीं की है। मेरे कितने दोस्त हैं, घर है, परिवार है···क्या नहीं है मेरे पास ?

विमल : अपने से बाहर के लोग सिर्फ हमारी बाहरी चीज़ों से जुड़े होते हैं।

राजन : तुम्हारे ख़यालात इतने छोटे हैं !

विमल : देखा नहीं, 'रिज़िग्नेशन' की बात सुनते ही दौड़े हुए पिताजी आये।

राजन : मैंने उनसे साफ कह दिया।

विमल : अपने बच्चों से कैसे कहोगे ?

राजन : जैसे सबके बच्चे घर में रहकर पढ़ते हैं, वे भी रहेंगे।

विमल : और मुझे क्या कहोगे ?

राजन : तुम्हें···?

[सन्नाटा]

विमल : हमने प्रेम-विवाह किया है। तुम मुझे अभाव में नहीं रख सकते। तुम्हारे सारे दोस्त-रिश्तेदार ऐसे हैं, जिनके बच्चे केवल कॉन्वेन्ट में पढ़ते हैं, जिनकी बड़ी-बड़ी शादियाँ हुई हैं··· तुम इतने ईमानदार, ज़िम्मेदार और जज़्बाती इन्सान रहे हो···तुम्हारे कुछ अपने उसूल भी रहे हैं···उनके लिये

हमने···

[तेज़ी से अन्दर जाती है। पृष्ठभूमि से गयादत्त और पिताजी के तेज़ हँसने की आवाज़ आती है। धीरे-धीरे प्रकाश राजन पर से बुझ जाता है।]

दूसरा दृश्य

वही स्थान। उसी दिन की संध्या। सूने मंच पर फोन की घंटी बजती है। श्री आकर उठाता ।

श्री : हलो...ओह, नमस्ते मेमसाहब। जी, इस वक़्त बंगले में कोई नहीं है। जी, मेमसाहब आयेंगी तो ज़रूर कह दूंगा ···हाँ, क्यों नहीं···जी हाँ···

[दायीं ओर से राजन का प्रवेश। श्री फोन रखता है।]

श्री : मिसेज़ राठौर का फोन था···

राजन : पिताजी को बुलाना।

श्री : हुजूर बाहर गये हैं···केजरीवाल के यहाँ चाय पर।

राजन : क्या ?

श्री : उनकी गाड़ी आयो थी, करीब चार बजे।

राजन : तुमने देखा है, वही गाड़ी थी, जिससे सुबह पिताजी यहाँ आये थे ?

श्री : जी हाँ, वही गाड़ी थी ।

राजन : मेमसाहब को बुलाओ । (सोफे पर बैठते हैं ।)

श्री : हुजूर. मेमसाहब मार्केट गयी हैं ।

राजन : पिताजी मेमसाहब के सामने गये हैं ?

श्री : जी हाँ ।

राजन : मेमसाहब को पता था पिताजी कहाँ जा रहे हैं ?

श्री : कह नहीं सकता, हुजूर ।

राजन : पानी पिलाओ ।

[श्री अन्दर जाता है । राजन उठते हैं । आफिस मेज पर से कोई कागज पढ़ते हैं । उसे फाड़ देते हैं । दूसरा कागज टाइपराइटर पर चढ़ाकर तेजी से टाइप करने लगते हैं । श्री आता है । पानी लिये खड़ा रहता है । बायीं ओर से विमल का प्रवेश । हाथ में दो-तीन पैकेट हैं । राजन पानी पीते हैं ।]

विमल : ओफ···थक गयी । (सोफे पर बैठती हैं ।)

राजन : (आते हैं ।) पिताजी कहाँ गये ?

विमल : अब तक नहीं आये क्या ?

राजन : गये कहाँ ?

विमल : केजरीवाल के यहाँ चाय पर गये हैं ।

राजन : क्यों गये ?

विमल : (चुप)

राजन : उसे कैसे मालूम, पिताजी यहाँ आये हैं ? उसकी गाड़ी यहाँ आयी थी ? तुमने मुझे टेलीफोन क्यों नहीं किया ? वह कैसे, क्यों गये ?

विमल : मुझे क्या मालूम ?

राजन : पिताजी यहाँ आये कैसे थे ? ट्रेन से या···?

विमल : (चुप)

राजन : वह घर से यहाँ केजरीवाल की ही गाड़ी से आये—यह तुमने भी मुझे नहीं बताया ।

[सन्नाटा]

विमल : केजरीवाल को पिताजी से जान-पहचान है ।

राजन : तो··· वह टैक्स केस में वकालत करने गये हैं । अगर कुछ ऐसा-वैसा किया तो···

विमल : वह कह रहे थे···

राजन : उन जैसे बीसियों वकील उसके यहाँ

नौकरी करते हैं···मुझे डर है पिताजी कुछ कर न बैठें···श्री ! केजरीवाल को कोठी पर फोन मिलाना ।

[श्री फोन करता है ।]

राजन : मिल गया ?

श्री : जी हुजूर, घंटी बज रही है ।

राजन : पिताजी को बुलाना···

श्री : जी हाँ, हैलो···देखिये वहाँ कलक्टर साहब के पिताजी हैं क्या ? जी··· (फोन पर हाथ रख) हुजूर, केजरीवाल साहब आपसे···

राजन : नहीं···पिताजी को बुलाओ···

श्री : (फोन पर) हलो···पिताजी को ज़रा बुला दीजिये साहब । (हाथ रख) वह आपसे पहले बात करना चाहते हैं ।

राजन : मुझसे···?

[टेलीफोन लेकर बात करने का प्रयत्न, पर सहसा फोन रख देना ।]

विमल : पिताजी इतने भोले-भाले नहीं हैं कि वह उन्हें फँसा ले जाय ।

राजन : मैं भी इतना भोला-भाला नहीं था, पर पिताजी ने मुझे किस तरह फँसाया । और कर्तव्य के मूल्य पर मैं खुद यहाँ कितना फँसा !

[विराम]

विमल : (उठकर) साहब ने चाय पी ?

श्री : जी नहीं ।

[विमल जाने लगती है ।]

राजन : मार्केट में किसी का कोई बिल तो नहीं बाकी है ?

विमल : सिर्फ साँवलदास के यहाँ हिसाब करना था । अजीब ढंग से उल्टे-सीधे एकाउन्ट्स बना रखे थे । संयोग से वहाँ गयादत्त जो श्री गये···

राजन : और झट सारा एकाउन्ट ठीक हो गया ।

विमल : क्या ?

राजन : मेरा सिर !

विमल : यह क्या हो जाता है तुम्हें ?

राजन : ज़रा यह पैकेट दिखाना । (लेकर) साँवलदास··· (पैकेट को फाड़ता है । उसमें रखी साड़ी को हवा में खींचते हुए) श्री, साँवलदास को मिलाना ।

[श्री नम्बर देखकर फोन करता है । विमल भीतर चली गयी है ।]

राजन : उनसे कहना, यहाँ आकर अपना हिसाब कर जायँ ।

श्री : (फोन पर)···साँवलदास जो···मैं

कलक्टर साहब का चपरासी बोल रहा हूँ। साहब का हुक्म है कि यहाँ आकर अपना हिसाब कर जाइए··· जी···जी···(थमकर) हुजूर, साँवलदास जी बोल रहे हैं कि अब कोई हिसाब बाकी नहीं है।

राजन : (खुद फोन लेकर) अभी मेमसाहब जो हिसाब करके आयी हैं, उसे कैंसिल कीजिये, और हमारा सारा हिसाब लेकर आइये और पेमेन्ट ले जाइए। (फोन रख देता है।)

राजन : (सहसा) कौन ?

श्री : (देखकर) पिताजी।

राजन : साड़ी उधर करो।

[श्री साड़ी बटोरकर बायीं ओर रखता है। दायीं ओर से पिताजी आते हैं।]

राजन : आपको वहाँ जाने की क्या ज़रूरत थी ?

पिता : बेटे, उनसे मेरा पुराना रिश्ता है। वहाँ इनकी शुगर मिल के सारे केस मैं ही देखता हूँ।

राजन : (पिताजी का मुँह देखते रह जाते हैं।)

पिता : केजरीवाल इतने बुरे नहीं हैं···

राजन : आपको जब वहीं वकील बने रहना था, तब मुझे इस तरह की नौकरी में क्यों डाला ?

पिता : बेटे, तुम कुछ समझते नहीं।

राजन : उसने क्या-क्या कहा !

पिता : वह क्या कहते ?

राजन : आपने उससे क्या-क्या कहा ?

[पिताजी हँसते हैं।]

राजन : (घबराकर) पिताजी !

पिता : भाई, मैं इतना बेवकूफ नहीं।

राजन : जहाँ आप दोनों बैठे बातें कर रहे थे, वहाँ कोई और था ?

पिता : कोई और ?···उसे टेपरिकार्डर ही कहते हैं न, सिर्फ उसी में से संगीत बज रहा था। उन्होंने तब खुद बन्द कर दिया···

[राजन की घबराहट और बढ़ जाती है।]

पिता : बेटे, कहीं कुछ फर्क नहीं पड़ता। बहुत पुरानी और न जाने कितनी बड़ी यह दुनिया है, इसकी कोई थाह नहीं। जो कुछ भी कोई कह दे, हमें उसी पर यकीन करना पड़ता है। और जहाँ तक इन्सान की

तरक्की की बात है···उसने तरक्की-फरक्की कुछ नहीं की है। वह सिर्फ तरक्की, तहज़ीब, तमद्दुन का नाटक खेलता चला आया है। बुनियादी, तौर पर दरअसल वह वहीं खड़ा है। वही डर, वही भूख, वही···

राजन : केजरीवाल से आपको क्या बातचीत हुई, वह याद नहीं है!

पिता : तुम्हें सारी चीज़ें याद हैं, तभी तो इतने दुःखी हो। मैं कहता हूँ दुनिया जहन्नुम में जाय, तुमसे क्या? ···मुझसे क्या? क्या है हमारे अधिकार में? हमारी क्या ताकत है? इस ब्रह्माण्ड में हम सूई की नोक का करोड़वाँ हिस्सा भी तो नहीं हैं··· हँह···!

राजन : श्री, इन्हें अन्दर ले जाओ।

पिता : चल, हट बे।

[कोई शेर गुनगुनाते हुए अन्दर चले जाते हैं। राजन क्षण भर बाद फोन करते हैं।]

राजन : हलो, एस० पी०···केजरीवाल की कोठी में अभी 'रेड' करो···कैसे भी हो···उसके 'टेपरिकार्डर' में कुछ बड़ी इम्पार्टेन्ट बातें हैं। कोई भी 'टेप' छोड़ना नहीं है···अभी··· तुरन्त! (फोन रखते हैं। फिर बढ़कर एक कागज़ उठाते हैं, पर पढ़ नहीं पाते।) मैं क्या हूँ···उत्तर देने का वह वक्त आ गया है। मैं इन सबको बहुत पहले बता देता, पर मैं अपने उसूलों से मजबूर था···पर ये उसूल क्या हैं? खुद अपनी नज़र में ऊँचे उठे रहने की बैसाखी के अलावा और क्या है? ···कहते हैं राजनीति ने देश को बरबाद किया···जैसे धर्म ने कुछ कम बरबाद किया···

[विमल तेज़ी से निकलती हैं।]

विमल : सुनिये···सुनिये···पिताजी क्या-क्या बक रहे हैं?

राजन : धर्म से सवाल नहीं करते।

विमल : चलकर सुनो तो सही।

राजन : वे भाग्यशाली हैं।

विमल : उन्हें मना कर दो।

राजन : वे मेरे पिता हैं।

विमल : यह गलत है।

राजन : मैं कुछ नहीं कर सकता।

विमल : क्या?

राजन : (निशब्द)

विमल : तुम कुछ···

राजन : मेरे गले के भीतर···(कुछ अटक-सा गया है।) जैसे कोई व्यवस्था घर कर गयी हो, और मैं उसके चारो ओर केवल बातों से पहरा देता रहा हूँ··· ···मैं फिर भी अपनी वह बात नहीं कह पाया। तुम कह लेती हो, पिताजी कह लेते हैं···

विमल : राजन !

राजन : (निःशब्द)

दूसरा अंक

▱

पहला दृश्य

वही स्थान। दूसरे दिन का समय। टेप रिकार्डर चल रहा है। उसमें से कभी संगीत उठता है, कभी बातें, कभी शोर, कभी हँसी···कभी अज़ीबोगरीब संवाद और आवाज़ें। राजन मूर्तिवत् सुन रहे हैं। भीतर से विमल आती हैं। राजन के पीछे खड़ी हो जाती हैं।

विमल : (अत्यन्त स्नेह से) अब तक यह 'टेप' खत्म नहीं हुआ ?

राजन : (पीछे हाथ उठाकर विमल को बाँधकर सिर हिलाता है।)

विमल : बंद भी करो। (बढ़कर टेप मशीन बन्द कर देती है।)

विमल : पिताजी की इच्छा आज जाने को नहीं थी। मैं उनके पैर छूने बढ़ी, उन्होंने भरी आँखों से मुझे आशीष दिया। 'बहू, सब कुछ तुम्हारे ही अधिकार में है' (हँस पड़ती हैं।) आज तुमने दाढ़ी नहीं बनायी। यह क्या सूरत बना रखी है! 'बोर' कहीं के!

[राजन की हँसी। उसी समय फोन आता है।]

विमल : (फोन पर) ओह···हैलो मिसेज राठौर! डिनर पार्टी? ज़रूर··· ज़रूर···आप आइए तो सही···प्रोग्राम बनाते हैं। ज़रूर आइए। (फोन रखती हैं।)

राजन : विमल, याद करो, हम इस नौकरी में आये-आये ही थे। वह छोटा-सा बँगला याद है न, उस कमरे की खिड़की खोलते ही गंगा का वह दूधिया कछार लहराने लगता था।

विमल : कितना बेकार था वह बँगला। हमारी शादी में जितने सारे सामान मिले थे, उनके रखने तक की भी जगह न थी। सारे कीमती सामान उतने

दिन तक पापा के घर पड़े थे।

राजन : उस कमरे में रहना कितना अच्छा लगता था।

विमल : गंगा की सारी धूल कमरे में आती थी।

राजन : खिड़कियाँ खोलकर सोना स्वर्ग जैसा लगता था।

विमल : कितने मच्छर थे वहाँ!

राजन : और हमें मच्छरदानी लगाकर सोना बिलकुल नापसंद था।

विमल : जंगली कहीं के।

राजन : क्यों? बताओ···।

विमल : वहाँ का 'एन्वायरन्मेन्ट' ही ऐसा था... जंगल-जैसा।

राजन : तभी मैं जंगली था, और तुम थीं जंगल की मोरनी। मैं कहीं भी तुम्हें पकड़ लेता था, फिर हम कहीं खो जाते थे।

विमल : वह एस० डी० एम० का बँगला था, यह डी० एम० का बँगला है!···और यह बाहर का कमरा है···जहाँ तुमने अपनी ऑफिस भी घुसा रखी है। जगह और वक्त का खयाल तो हमें होना ही चाहिए। हर काम के लिये

अलग-अलग जगहें होती हैं। उसके लिये वैसा माहौल होता है। इसीलिए एक मकान में इतने कमरे बनाये जाते हैं और उनके मुताबिक चीज़ें होती हैं।

राजन : इस तरह 'एन्वायरन्मेंट' बनाया जाता है। पर उस पहले बँगले में ऐसा कुछ नहीं था।

[विराम]

विमल : वह हमारा पहला बँगला था।

राजन : उसके बाद हर 'ट्रांसफर' में बड़े से बड़े बँगले मिलते गये और 'एन्वायरन्मेंट' पूरा होता गया···।

विमल : वह बहुत ज़रूरी है।

राजन : किस चीज़ के लिए वह ज़रूरी है ?

विमल : बन्द भी करो···मेरा तो मुँह दुःखने लगा।

राजन : हम वही चीज़ भूलते गये, जिसके लिये हमने इतना सारा 'एन्वायरन्मेन्ट' बनाया। (सहसा) तुम अब इस तरह के ब्लाउज़ क्यों पहनती हो ?

विमल : 'यू लाइक इट' ?

राजन : पहले तुम इस तरह के ब्लाउज़ नहीं पहनती थीं।

विमल : 'यू नो, नेसेसिटी इज़ द मदर ऑफ इन्वेशन।

राजन : यानी यह ब्लाउज़ नहीं इन्वेंशन है।

[दोनों हँस पड़ते हैं।]

राजन : बाहर देखो, कितना अच्छा मौसम है।

विमल : कपड़े बदलकर आती हूँ, घूमने चलेंगे।

राजन : ऐसे ही चलो। बिलकुल इसी वक्त, इसी तरह।

विमल : हाय, कोई देखेगा तो क्या कहेगा ?

राजन : क्या कहेगा ?

विमल : मिसेज़ राठौर को देखा है, जब वह बाहर निकलती हैं तो···

राजन : तुम विमल हो···दी विमल !

विमल : सारा ग्रामर भूल गये। 'प्रॉपर नाउन' के पहले 'दी' नहीं लगता···अपने चारों ओर के लोगों को हर वक्त हमें ध्यान में रखना पड़ता है।

राजन : तभी ग्रामर का वह सिद्धान्त बना है···(सायास) तुम्हारे ये हाथ कितने सुन्दर हैं। तुम उस बँगले में इन्हीं उँगलियों से सितार बजाती थीं।

विमल : सितार भीतर ड्राइंग रूम में रखा है···मिजराब भी है।

राजन : और अब 'एन्वायरन्मेन्ट' भी पूरा

है !···तो ले आओ सितार, बजाओ वही खम्माच···वही जैजैवन्ती ।

विमल : पर अभी, इसी वक्त कैसे ?

राजन : अब किस चीज़ की कमी है ?

विमल : तुम बच्चों की तरह बातें करते हो।

राजन : आज एक क्षण के लिए मुझे बच्चा ही मान लो ।

[हाथ की पकड़ तेज़ हो जाती है। विमल हँसती है। राजन की पकड़ सहसा ढीली हो जाती है।]

विमल : तब इन हाथों को तुम इतनी आसानी से नहीं छोड़ते थे। इसे छूते ही हम दोनों के हाथ जैसे काँपने लगते थे··· तुम मुझे खींचकर अपने अंक में···

राजन : तब यह 'एन्वायरन्मेन्ट' नहीं था।

विमल : पर उसके लिये यह बेहद ज़रूरी था।

राजन : बस···बस, बन्द करो यह नाटक। हम बातों से इस शून्य को नहीं भर सकते ।

विमल : बातें तुमने शुरू कीं ।

राजन : वजह तुम हो !

विमल : पर बुनियाद तुम हो ।

राजन : गलत । जो आज मेरे चारों ओर है, वह मैंने नहीं चाहा ।

विमल : तुमने इसका विरोध कब किया ?

राजन : विमल !

विमल : तुमने जो-जो चाहा, वही-वही मैं बनती गयी । वही-वही चीज़ें तुम्हारे चारों ओर आती गयीं···यह टूटी हुई मूर्ति, यह तसवीर तुम्हारी ही पसन्द है !··· मैं सब कुछ वही करती गयी···वही बनती गयी···जो तुमने पसन्द किया । यहाँ तक कि कपड़े भी मैंने तुम्हारी ही पसन्द के पहने । मैं तो आज तक कुछ नहीं बोली···

राजन : मैं ही कब···?

विमल : पर क्यों नहीं कभी···?

[सन्नाटा]

विमल : जब से नौकरी में आये, दिन-रात वही काम···काम···काम !···और कोई कुछ जैसे इस दुनिया में है ही नहीं।

राजन : मैं औरों की तरह नहीं हो सकता ।

विमल : तभी मुझे इतने 'एन्वायरन्मेन्ट' की ज़रूरत महसूस होती रही । और मैं···

राजन : विमल !

विमल : तुम सोचते हो यहाँ से बाहर कुछ और है; जैसे इतने वर्षों में अभी तक वह

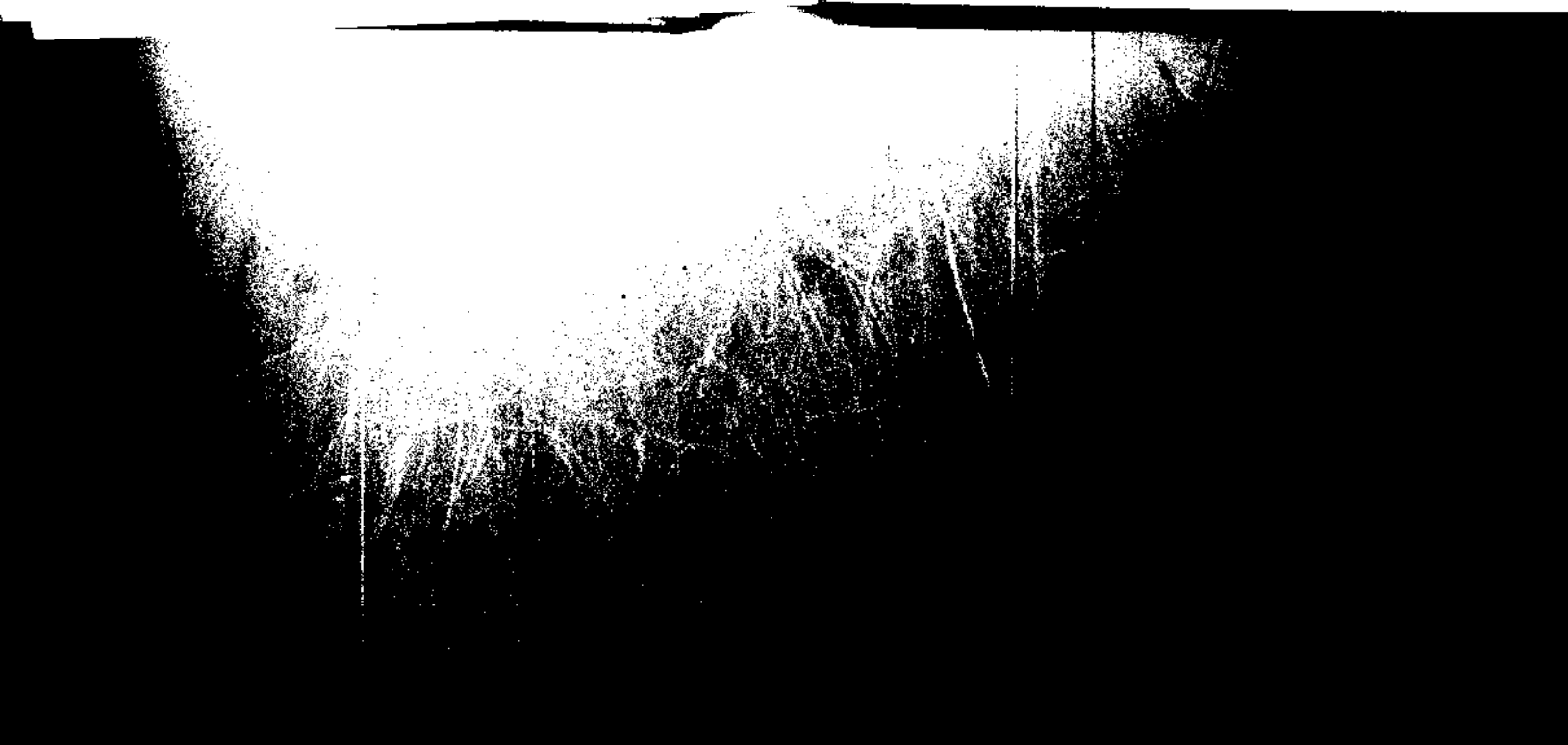

बाहर नहीं देखा।

राजन : कहाँ देखा···कैसे देखा ?

विमल : क्यों नहीं देखा ?

राजन : यह नौकरी, मैं, तुम सब लोग मुझे घेरे रहे। किसी ने आज्ञा दी, वही अहँकार जागा, किसी ने पुकारा, किसी ने देखा, किसी ने···

विमल : आत्मन, गयादत्त, केजरीवाल···पिताजी···मैं···

राजन : क्या बकती हो ?

विमल : तुम्हारे हिसाब से ये सब लोग बाहर खड़े हैं।

राजन : उस बाहर को तुम नहीं समझ सकतीं।

विमल : क्योंकि मैं अन्दर नहीं हूँ।

राजन : तुम्हें क्या ?

विमल : (हँसकर रह जाती हैं।)

राजन : आत्मन, गयादत्त···

विमल : अगर तुम यहाँ न आते, तो इन्हीं दोनों में से किसी एक की तरह होते।

राजन : विमल···!

विमल : मैं मज़ाक कर रही हूँ।

राजन : 'थैंक्यू'।

विमल : अच्छा चलो, इसी तरह घूम आएँ··· अच्छा, सितार ले आती हूँ···चलो,

तुम्हें आज एक क्षण के लिये बच्चा ही मान लेती हूँ।

राजन : 'थैंक्यू वेरी मच'···

[विमल भीतर चली जाती है। राजन की आँखें बंद हैं। मंच का सारा प्रकाश राजन पर टिक गया है। सहसा उस अंधकार में से आत्मन प्रकट होता है।]

राजन : तुम···आत्मन !

आत्मन : पहचान लिया !

राजन : सोचता हूँ···

आत्मन : यहाँ से अब बाहर जाना चाहते हो ?

राजन : हाँ।

आत्मन : आओ चलो बाहर।

राजन : कोई रास्ता है क्या ?

आत्मन : रास्ता चलने से बनता है।

राजन : रास्ता चलने से बनता है।···पर वे लोग मुझे एकटक देख रहे हैं।

आत्मन : देखने दो।

राजन : वे अपने ही लोग हैं।

आत्मन : वे स्वार्थी हैं

राजन : मैं उन्हें प्यार करता हूँ।

आत्मन : अच्छा, पैर तो उठाओ···

राजन : कैसे ?

आत्मन : इस तरह ।

राजन : अच्छा, अब इसे कहाँ रखूँ ?

आत्मन : आगे जमीन है ।

राजन : उठे हुए पैर और नयी जमीन के बीच यह जो शून्य है···

[आत्मन हँस पड़ता है ।]

राजन : तुम हँस पड़े न ! तुम मुझे नहीं जानते ।

आत्मन : कैसे जानता? ···तुम इधर नौकरी में आये, मैं उधर राजनीति में छुट गया···तुम इधर जी-जान से घर-गृहस्थी सजाने लगे, दिन-रात नौकरी करते रहे, मैं उधर विरोध में जा फँसा···रास्ते में कई बार देखा था, तुम मुझसे आँख बचाये भागे चले जा रहे थे···मैंने कई बार पुकारा । कई बार तुम्हें···

राजन : मैंने तुम्हें अकसर देखा है—भाषण देते हुए, बहस करते हुए, कहीं जुलूस की पहल करते हुए···दफा एक सौ चौवालीस को तोड़ते हुए···नामिनेशन पेपर्स पर मेरे सामने दस्तखत करते हुए···और ज़मानत जब्त होने पर कहीं···

आत्मन : यही तो तुम्हारी चेतना थी···स्वतंत्रता के बाद आज़ादी की लड़ाई शुरू होती है ।

राजन : यह चेतना मेरी अब तक है ।

आत्मन : झूठ! ···तुमसे अब मेरा कोई रिश्ता नहीं । चौदह वर्ष हुए···मैं तुमसे बहुत दूर छुट गया···

राजन : मैं बिलकुल अकेला हूँ !

आत्मन : कोई जगह खाली नहीं रहती···वहाँ कोई आगन्तुक आ गया होगा ।

राजन : तुम कैसी बेसिर-पैर की बातें करते हो !

आत्मन : तुम्हें यहाँ से बाहर निकलने के लिये कोई बहाना चाहिए न···यह लो पिस्तौल और मुझे मार दो ।

राजन : (भयभीत)···तुम आत्महत्या करोगे ?

आत्मन : इस दुनिया में विजयी होने का और कोई रास्ता नहीं ।

राजन : यही वह बाहर है, जहाँ तुम मुझे ले जाना चाहते हो ?

[दूसरी ओर सहसा अंधकार में से गयादत्त प्रकट होता है ।]

गयादत्त : पर क्या यही तुम्हारे भीतर नहीं ?

राजन : यहाँ मैं सुरक्षित हूँ ।

आत्मन : पर मैं सुरक्षित नहीं ।

राजन : यह मेरी जिम्मेदारी नहीं ।

गयादत्त : मेरी भी नहीं ।

आत्मन : मेरी भी नहीं ।

राजन : तुमने ऐसा होने क्यों दिया ?

गयादत्त : तुमने क्यों होने दिया ?

आत्मन : शक्ति किसके पास थी ?

राजन : तुम्हारे पास···तुम आज़ाद थे ।

गयादत्त : तुम इतने बड़े अफसर थे ।

आत्मन : तुम इतने सफल पॉलीटीशियन थे ।

आत्मन
गयादत्त : (एक साथ) ठीक···बिलकुल ठीक । निजी शक्ति के स्तर पर ही एक-दूसरे से बड़ा होना हमारा लक्ष्य था और इस तरह हम एक दूसरे से कट गये ।

राजन : तुमने काटा ।

गयादत्त : तुमने ! (राजन को) तुमने मेरा साथ नहीं दिया ।

आत्मन : (राजन से ही) तुमने मेरे संग विश्वास-घात किया । आँख मूंदकर मुझे इसके हाथों सौंप दिया ।

गयादत्त : मैं अकेला कहाँ-कहाँ लड़ता रहा ।

राजन : मैं भी दिन-रात लड़ता रहा ।

गयादत्त
आत्मन : उसी व्यवस्था को बनाये रखने के लिये ।

राजन : नहीं ।

गयादत्त : अब बताओ, सबसे ज्यादा ताकतवर कौन है ?

राजन : तुम !

गयादत्त : तुम !

आत्मन
गयादत्त : तुम !

गयादत्त : अपने से हमें अलग कर अब अकेले बाहर जाना चाहते हो । पता है बाहर क्या है ? मैं !

आत्मन : मैं हूँ ।

[भयभीत राजन की आँखें फिर बंद हो जाती हैं । वे दोनों अदृश्य हो जाते हैं । राजन तेज़ी से बाहर चले जाते हैं । एक क्षण के लिये मंच पर अंधकार छा जाता है । जब प्रकाश लौटता है—विमल भीतर से निकलती हैं, जैसे किसी को ढूंढ रही हैं ।]

विमल : मिसेज राठौर! ···मिसेज राठौर! ··· ओह, आप कहाँ छिपी थीं ?

मि० राठौर : बड़ी इन्ट्रेस्टिंग मैगज़ीन है । लगता है आपको भी हिन्दी फिल्मों से बहुत शौक है । हाय ! यह हीरो देखिये, कहाँ से आ गया । कमाल है···!

विमल : मैं इंगलिश फिल्में ज़्यादा देखती हूँ।

[विराम। पृष्ठभूमि से पुकार आती है।]

पुकार : बहू !···बहूरानी···!

विमल : आयी, पिताजी !

मि० राठौर : ससुरजी कब आये ?

विमल : आज दोपहर में।

[भीतर जाती हैं। मिसेज राठौर मैगजीन देखते-देखते एक फिल्मी गाना गुनगुनाने लगती हैं विमल आती हैं।]

मि० राठौर : कल डिनर का इंतजाम किसे दिया है ?

विमल : पिताजी का ख़याल है डिनर का सारा इंतज़ाम किसी अच्छे 'कैटरर' को दिया जाना चाहिए। वह तो चाहते हैं कि···

मि० राठौर : मिस्टर राजन का क्या ख़याल है ?

विमल : उनका ख़याल ? (हँस पड़ती हैं) बस, सब कुछ चुपचाप। कहीं 'लीकआउट' नहीं, हाँ।

मि० राठौर : यह कैसे हो सकता है ! मैं उन्हें ऐसे अंदाज से बताऊँगी कि··· (हँस पड़ती हैं।)

विमल : आजकल डिनर में 'बुफ़े सिस्टम' ही ठीक रहता है।

मि० राठौर : जो हाँ, जो जहाँ चाहे, खड़े होकर, बैठकर बड़े इतमीनान से खा-पी सकता है।

विमल : एक-दूसरे को देखने-दिखाने का मौका भी मिलता है।

मि० राठौर : जो जिसके संग चाहे, घूम-फिरकर बातें कर सकता है।

विमल : और किसी से बोलने की इच्छा न हो तो, सबके बीच में चुप भी रह सकता है।

[हँसी]

मि० राठौर : और उस खामोशी को भरने के लिये बड़े मजे से प्लेट पर चम्मच खनका सकता है।

[हँसी]

विमल : मेरा ख़याल है, एक-दूसरे से न बोलने के लिये ही लोग पार्टियों में बोलते हैं।

[विराम]

मि० राठौर : आपको आया कहाँ गयी ?

विमल : हटा दिया, ड्राइवर से रोमांस करने लगी थी।

मि० राठौर : आया लोग भी बहुत तंग करती हैं।

विमल : आपने जूड़ा किससे बनवाया ?

मि० राठौर : खुद बनाया है, क्यों ?

विमल : पहले मैं भी इसी तरह बनाती थी, अब लेटेस्ट यह है ।

मि० राठौर : जी नहीं, फिर यही लौट आया है । दरअसल इस जूड़े के बैकग्राउंड में चेहरे पर एक खास बात पैदा हो जाती है ।

[विराम]

विमल : मेरी कार आपको पसन्द है ?

मि० राठौर : पसन्द तो है, लेकिन फिर सोचा, 'लेटेस्ट माडेल' ही क्यों न लें !

विमल : मैंने भी फिर सोचा, वहाँ पहुँचकर दो कारें क्यों न रखी जायँ···'मोरओवर, दैट इज अवर लकी कार' ।

[विराम]

मि० राठौर : मिस्टर राठौर का भी प्रमोशन अब होने को है । दरअसल वह कभी का हो जाता, इन्होंने ज़रा भी परवाह नहीं की । आई० जी० साहब मेरे खास फूफा के 'फ़र्स्ट कज़िन' हैं ।

विमल : सच पूछा जाय तो मिस्टर राजन का प्रमोशन अब शुरू हुआ है···बस, एक बार शुरू हो जाय, फिर तो आदमी···

[विराम]

विमल : आपके पास 'रेंज' नहीं है ?

मि० राठौर : 'इनफैक्ट' हमें उसकी 'ब्रेड' पसन्द नहीं ।

विमल : हमारे पास इतने कीमती सामान इकट्ठे हो गये हैं, इन्हें 'पैक' करना भी एक मुसीबत है !

मि० राठौर : इसीलिये हम बेकार की चीज़ें नहीं खरीदते ।

विमल : जिसके पास चीज़ ही न हो, वह उसकी क़दर क्या जाने ।

मि० राठौर : मिसेज राजन, ऐसे कोई नहीं कहता ।

विमल : आपने मुझे मजबूर किया ।

मि० राठौर : पर वजह आप हैं ।

विमल : आप हैं ।

मि० राठौर : आप हैं ।

[उसी क्षण दायीं ओर से आत्मन के संग राजन का प्रवेश । दोनों औरतें चुप हो जाती हैं और प्रसन्नता का अभिनय करने लगती हैं ।]

राजन : (प्रवेश करते ही) क्या यह मुमकिन है, केजरीवाल अपनी मिल में इस तरह 'लॉकआउट' कर दे ?

आत्मन : उसके लिये मुमकिन क्या नहीं है !

राजन : मैंने उसे 'कोर्ट' में 'समन' किया है।

आत्मन : इन बातों से उस पर कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता।

राजन : फ़र्क़ पड़ेगा। वह फ़र्क़ दिखाकर ही मैं यहाँ से जाऊँगा।

विमल : सुन लीजिये इनकी बातें।

मि० राठौर : कभी-कभी ऐसे ही मिस्टर राठौर भी कह जाते हैं।

विमल : दोनों में बड़ा फ़र्क़ है।

आत्मन : मेरा ख़याल है, होगा कुछ नहीं।

राजन : इसी विश्वास से आप राजनीति में आये हैं ?

आत्मन : राजनीति मुझे इस विश्वास पर खींचकर ले आयी है।

राजन : (सहसा) ओह् मिसेज राठौर, माफ कीजियेगा।

मि० राठौर : शुक्र है, देखा तो ! ···क्या हाल हैं ?

राजन : आप बताइए।

मि० राठौर : कल आपके यहाँ ग्रैन्ड डिनर पार्टी है।

राजन : डिनर ?

मि० राठौर : हाँ, 'फेयरवेल डिनर'। आपकी तरक्की की खुशी का डिनर।

राजन : यह क्या तमाशा है ?

विमल : आपको सब कुछ तमाशा ही लगता है !

मि० राठौर : जनाब, यह डिनर मैंने तै किया है।

[विराम]

राजन : यह डिनर नहीं, मेरा मज़ाक है !

मि० राठौर : क्या ?

विमल : कहने दो इन्हें।

राजन : कहने नहीं, मैं वही करने जा रहा हूँ।

[इस बीच आत्मन बुक-रैक के पास जाकर एक किताब पढ़ने लगे थे।]

आत्मन : रिजाइन करके आप कहाँ जायेंगे ?

राजन : यहाँ से बाहर।

आत्मन : बाहर से फिर कहाँ ? (लौह तरंग बजाने लगना।)

राजन : बाहर आकर आप लोगों की तरह कोई पार्टी नहीं बनाना चाहता।

आत्मन : सवाल चाहने न चाहने का नहीं, वहाँ भी इसी तरह अपने आप कुछ और ही हो जाता है।

राजन : आई हेट पॉलिटिक्स···

आत्मन : हियर-हियर···यही उसकी मंशा थी।

[राजन तेज़ी से अन्दर जाते हैं।]

विमल : मैं अभी आयी। (भीतर जाती हैं।)

मि० राठौर : जी, आपको कहीं देखा है।

आत्मन : पुलिस हिरासत में देखा होगा।

मि० राठौर : सुना है, आप लेक्चर बहुत अच्छा देते हैं।

आत्मन : मैं ?···जी नहीं, वह गयादत्त साहब हैं।

मि० राठौर : ओह, सॉरी। मैंने समझा आप ही गयादत्त हैं।

आत्मन : तारीफ के लिये शुक्रिया, कैसे भी हो।

[विराम]

मि० राठौर : आप तो इतने बड़े 'लेबर लीडर' हैं···आप कोई क्रान्ति क्यों नहीं करते ?

आत्मन : क्रान्ति···इन्फैक्ट आई फील, मैन हैज कम टू सी हिमसेल्फ नाट एज़ ए फ्री, बट एज़ डिटरमिन्ड। नाट एज़ ए मूवर, बट एज़ मूव्ड। ही इज लाइक ए ब्लाइन्ड फंगस, कास्मिक वेस्ट ऑफ मैटर···

मि० राठौर : हाय ! आप कितनी अच्छी अंग्रेज़ी बोलते हैं। मैं सच एक अँग्रेज़ी 'ट्यूटर' की तलाश में थी।

आत्मन : (हतप्रभ)

मि० राठौर : आजकल तो आप बेकार ही होंगे···

इलेक्शन से पहले आप 'विद फुल पे' छुट्टी ले लीजियेगा···'आई लव इंगलिश'···

[आत्मन को लाचार हो भागना पड़ता है। भीतर से विमल और राजन आते हैं।]

विमल : आखिर वह तुम्हारे पिता हैं।

राजन : चारों ओर सब कोई कुछ न कुछ है! ···तब आखिर मैं क्या हूँ ?

[विराम]

विमल : मिस्टर आत्मन चले गये क्या ?

मि० राठौर : हाय ! कितनी अच्छी अंग्रेज़ी बोलते हैं।

[सन्नाटा। टेलीफोन की घंटी बजती है।]

विमल : हेलो···कोर्ट से ! ···लीजिये, ए० डी० एम० का फोन है।

राजन : जी हाँ···क्या ?···गैरमुमकिन··· केजरीवाल के केस में 'स्टे आर्डर' से क्या मतलब ! जी···पूरी फाइल के साथ आर्डर मेरे पास भेजिये··· फौरन ! (फोन रखना।)

विमल : केस सरकार का था, वह चाहे जो करे। अफसर का कोई मामला निजी

नहीं होता।

राजन : (आहत) गुलाम का कोई निजी व्यक्तित्व भी नहीं होता।

विमल : इसमें तुम्हारे दुखी होने की क्या बात है ?

राजन : मनुष्य भी तुम्हारे लिये एक पदार्थ है।

विमल : हर बात में उसी मनुष्य पर टूट पड़ते हो।

राजन : वही सबकी बुनियाद है।

विमल : तुमसे कोई क्या बात करे। जैसे तुम्हीं सरकार हो।

राजन : मैं कुछ नहीं हूँ, यहीं से मैं अपनी नयी ज़िन्दगी शुरू करना चाहता हूँ। (सन्नाटा) यहाँ कोई डिनर पार्टी नहीं होगी।

मि० राठौर : पर ऐसी भी क्या बात हो गयी। मिस्टर राठौर की ज़िन्दगी में तो आये दिन ऐसे केस होते रहते हैं।

विमल : दोनों में बहुत फ़र्क़ है।

[भीतर से पिताजी निकलते हैं।]

पिता : बहू, क्या है ?

विमल : उसी केजरीवाल के केस में कोई 'स्टे आर्डर' आ गया है।

मि० राठौर : नमस्ते···आइए, आप इधर बैठिये··· अच्छा, मैं चलूंगी···फोन करना, हाँ···'बाई'। (बायीं ओर से बाहर जाती हैं।)

पिता : कोई कर भी क्या सकता है।

राजन : मनुष्य क्या नहीं कर सकता ?

[विराम]

विमल : कहते हैं, अब यहाँ कोई डिनर पार्टी नहीं होगी।

पिता : (इशारे से उत्तर देते हैं।)

विमल : लोगों की डिनरपार्टियों में हम गये हैं, हमें भी डिनरपार्टी देनी होगी।

राजन : मैं सबसे माफी माँग लूँगा।

विमल : मैं कैसे माँगूंगी ?

पिता : राजू बेटे, बात यह है कि···

राजन : पिताजी, मैं हाथ जोड़कर आपसे माफ़ी माँगता हूँ···

[पिताजी और विमल अन्दर जाते हैं। श्री फाइल लिए आता है। फाइल लेकर राजन देखते हैं। थोड़ी देर बाद श्री आता है।]

श्री : हुजूर, गयादत्त साहब आये हैं।

राजन : कहना वक्त नहीं है।

[श्री जाता है। राजन सोफे पर बैठे

आर्डर पढ़ रहे हैं। सहसा बायीं ओर शोर होता है। श्री, गयादत्त को भीतर आने से रोक रहा है।]

गयादत्त : उल्लू के पट्ठे, तुझे कुछ समझ भी है। (अन्दर आते हैं।) यह क्या इंतज़ाम है !

राजन : '''आप उधर तशरीफ रखिये !

गयादत्त : शुक्रिया'''धन्यवाद। आज बड़ी उमस है। इस वक्त कमरे में बैठना'''चलिये न, कहीं घूम आएँ।

[गयादत्त, ऑफिस टेबुल के पास खड़े हैं। राजन कागज़ात पढ़ रहे हैं।]

गयादत्त : लगता है, वही 'स्टे आर्डर' वाली फाइल है। कोर्ट ने केजरीवाल को इस बात पर 'स्टे आर्डर' दिया कि टैक्स का 'एससमेन्ट' ही गलत है। वह सारा फिर से 'एसस' किया जाय, तब केजरीवाल पर कोई एक्शन लिया जाय'''गोदाम सील हो जाने से बेचारे को बड़ा नुकसान हो रहा था। क्या किया जाय, सबकी अपनी-अपनी'''

राजन : डोन्ट डिस्टर्ब !

गयादत्त : कोई मेरे लायक सेवा हो तो बताइये। बिना बच्चों के घर बड़ा सूना-सूना

लगता है ''' सुना है, पिताजी आये हैं। बहुत बढ़िया आदमी हैं। उनसे मेरा बहुत पुराना रिश्ता है'''

राजन : क्यों ? आपके 'बाई एलेक्शन' में मैंने क्या मदद की थी ?

गयादत्त : अरे'''छोड़िये उन बीती बातों को।

राजन : तुम्हें बताना होगा !

गयादत्त : आप इतने आला ज़िम्मेदार अफसर थे''

राजन : (हतप्रभ)

गयादत्त : कुछ बहुत अच्छे अफसरों को अपने साथ रखना चाहिए। मैं धीरे-धीरे यहाँ से केन्द्र में पहुँचूँगा। आपको भी वहाँ ले जाऊँगा।

राजन : तुम्हें इसकी सज़ा मिलेगी।

गयादत्त : 'पेटीशन' का समय बीत गया।

राजन : मेरे पास और भी तरीके हैं।

गयादत्त : मैं ऐसे खाली बैठा हूँ क्या ?

राजन : तुम्हें मेरी ताक़त का पता नहीं !

गयादत्त : यही तो है मेरा काम—ताक़त को डोर का पता लगाते रहना। राजनीति और है क्या ? उसके पीछे कोई दर्शन है क्या ? (हँसना) सुना है आप इस नौकरी से इस्तीफा देकर बाहर आना चाहते हैं। याद रखियेगा,

हम उल्टे सरकार से ही आप पर मुकदमे चलवायेंगे । हम सैकड़ों आदमी आपके खिलाफ गवाही देकर जो चाहें, साबित कर देंगे ।

राजन : बाहर तुमसे ज्यादा आदमी मेरे साथ होंगे ।

गयादत्त : (हँसकर) बेचारे पढ़े-लिखे लोग नौकरी करेंगे या किसी का साथ देंगे । बाहर निकलना किसे कहते हैं, आपको यह तक नहीं पता ! ···भीतर रहकर ये आराम···ये सुख···आप इसे एक क्षण के लिये भी नहीं छोड़ सकते ।

राजन : तुम मुझे नहीं जानते ।

गयादत्त : इस जगह को जानता हूँ, जहाँ आप खड़े हैं । मैं यह भी साबित कर सकता हूँ कि आपने 'बाई एलेक्शन' में बेइमानी की है । (सन्नाटा) चलिये, टेलीफोन उठाइये·····उठाइये····· उठाइये···!

राजन : (चीखकर) शटअप !

[इस चीख के बाद राजन फोन करते हैं ।]

राजन : यस···राजन स्पीकिंग···यस···हाँ, केजरीवाल के गोदाम की सील तोड़

दी जाय···फायर आर्म्स वापस किये जायँ । (फोन रखते हैं ।)

गयादत्त : हुजूर, हमारी भी बड़ी मजबूरियाँ हैं, कोई सेवा हो तो जरूर मुझे याद कीजियेगा···अच्छा, नमस्ते ।

[गयादत्त तेजी से बाहर जाते हैं । राजन बढ़कर टाइपराइटर पर कुछ टाइप करते हैं । भीतर से विमल आती हैं ।]

विमल : चलो अन्दर···चाय तैयार है । सुनिये ···पिताजी चाय के लिये आपका इन्तज़ार कर रहे हैं ···यह क्या है ? 'रिजिग्नेशन' ।

राजन : सेफ में मेरी विल रखी है, उसे ले आओ ।

विमल : सेफ की चाबी तुम्हारे पास है ।

राजन : क्या ?

विमल : जिस दिन से तुमने उसमें अपना 'विल लॉक' किया, मैं नहीं जानती उसकी चाबी । (विराम) मेरी ज्वेलरी बैंक के लॉकर्स में है ।

राजन : मेरी विल से तुम्हारा कोई मतलब नहीं ?

विमल : चाय ठंडी हो रही है ।

राजन : थैंक्यू···!

[भीतर से पिताजी आते हैं।]

पिता : उठो, चलो न। दिन-रात इतना काम करते-करते···

राजन : यही आपकी इच्छा थी न !

पिता : सिर्फ मेरी ?

राजन : और किसकी ?

पिता : ऐसा नहीं सोचते।

राजन : कितना अच्छा होता !

पिता : अब और क्या परेशानी है ?

राजन : आप वकील हैं···मैं आपके लिये महज एक 'केस' हूँ।

पिता : ऐसा तुम सोचते हो।

राजन : पर क्यों ?

[बाहर से तेज़ी से आत्मन का प्रवेश]

आत्मन : आपको उन दोनों के खिलाफ कोई सबूत चाहिए था न, ये लीजिये··· केजरीवाल ने मुझे अपनी मिल में 'ऑनरेरी लेबर एडवाइजर' की पोस्ट आफर की थी——'मोस्ट कान्फीडेंशली' तीन हज़ार रुपये महीने आनरेरियम···और यह देखिये गयादत्तजी का कमाल——यह गुप्ती चिट्ठी उन्होंने अपने एक खास आदमी को दी थी,

मेरी हत्या कर देने के लिये। संयोग से वह आदमी मेरी लेबर यूनियन के एक मेम्बर का दोस्त निकला।

[खतों को राजन नहीं ले सके हैं। एक खत पिताजी पढ़ रहे हैं, दूसरा विमल के हाथ में है।]

पिता : इससे एक उम्दा केस चलाया जा सकता है।

विमल : इस सबूत पर गयादत्त को हिरासत में लिया जा सकता है।

पिता : ऐसे और भी कुछ कागज़ात हैं आपके पास ?

विमल : देखिए, आपके पास और जरूर होंगे।

राजन : (सहसा) कौन ? कौन खड़ा है उधर ?

[गयादत्त का प्रवेश]

राजन : अभी आप गये नहीं ?

गयादत्त : बाहर आपकी पुलिस से कुछ बातें करने लगा था——उनकी भी बड़ी समस्याएँ हैं···कहिए आत्मन साहब, आप क्या लेकर आये हैं ?

राजन : मिस्टर आत्मन, आप पुलिस स्टेशन जाइए···

गयादत्त : ओह, कुछ चिट्ठियाँ लेकर आये हैं। भाई, उन निजी खतों से साहब का

क्या ताल्लुक ?

आत्मन : मैं तुझसे बात नहीं करना चाहता।

गयादत्त : मुझे तो आपकी चिन्ता है। मैं आपकी बड़ी इज्ज़त करता हूँ। मसलन आप कितना अच्छा बोलते हैं। आप हमारे समाज की शोभा हैं।

आत्मन : (दोनों खत लेते हुए) खैर, इस गुंडेशाही के सामने, मैं अपने घुटने नहीं टेक सकता।

गयादत्त : भाई, भाषा का तो खयाल रखा करो···पता है कहाँ खड़े हो ?

आत्मन : आप दोनों के बीच—गुंडाशाही··· नौकरशाही !

पिता : (क्रोध में) आप लोग बाहर जाकर लड़िये !

राजन : बस। इतने से आप ऊब गये !

विमल : आइए, पिताजी···!

[विमल के संग पिता का प्रस्थान]

गयादत्त : मुझे दो खत।

आत्मन : मैं इन्हें अखबार में छपवाऊँगा और लोगों को बताऊँगा—नौकरशाही पर खड़ा हुआ प्रजातंत्र कितना खोखला और बेमानी होता है। यह एक बिलकुल नयी साम्प्रदायिकता है, जो

एक नये 'फासिज़्म' को जन्म देती है।

गयादत्त : सुना, कितने अच्छे खयालात हैं···! क्यों, तू इसे रोक सकता है ?

आत्मन : सिर्फ इतना जानता हूँ—तुम सबने मिलकर अर्थ और समाज की जो दीवारें बनायी हैं, उन्हें पहले तोड़कर ही तब कोई बुनियादी काम हो सकता है।

गयादत्त : तू विध्वंसक है···तुझ में कोई रचनात्मक शक्ति नहीं।

आत्मन : रचना के उस स्रोत को इसी काले पहाड़ ने बंद कर रखा है।

गयादत्त : बंद कर बकवास !

आत्मन : यह बेहूदा ठहरा हुआ शून्य मुझे ज़िन्दा ही निगल ले जाय···पर इसके मनहूस चेहरे को अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता।

गयादत्त : रुक···तू जायगा कहाँ ?

[आत्मन के पीछे गयादत्त का प्रस्थान। कुछ ही क्षणों बाद पृष्ठ-भूमि में पिस्तौल चलने की आवाज़। भीतर से पिताजी और विमल दौड़े आते हैं।]

पिता : क्या हुआ ?

विमल : आप बोलते क्यों नहीं ?

पिता : क्या हुआ ?

[दोनों बाहर दौड़ते हैं। गयादत्त का प्रवेश।]

गयादत्त : बड़े अफसोस की बात है, आत्मन ने आत्महत्या कर ली।

राजन : तूने आत्मन की हत्या की···मैं चश्म-दीद गवाह हूँ।

गयादत्त : अहाते के बाहर उसने···

राजन : तूने हत्या की···!

गयादत्त : फिर तो आप भी फँसेंगे।

[तेजी से गयादत्त का प्रस्थान। दूसरी ओर से दौड़ी हुई विमल आती हैं।]

विमल : हाय, इस तरह आत्मन की हत्या किसने की ?

राजन : 'आई हैव किल्ड हिम'···वह चीखा तक नहीं।

विमल : बकवास बन्द कीजिये।

राजन : अब बाहर निकल सकता हूँ।

विमल : हाँ, फाँसी मिलेगी।

राजन : फाँसी···(हँसी)

विमल : छीः छीः छीः !

राजन : (जैसे कोर्ट में खड़ा हो) मैंने पूरे होशो-हवास में, जान-बूझकर हत्या की। वह बेक़सूर था——जन्म से बेक़सूर—— अनजान···हेल्पलेस···उसे वही बनाया गया जो लोगों की इच्छा थी, ज़रूरत थी। (सहसा) यह ग़लत है···वह सरासर क़सूरवार था। उसका विश्वास था कि मनुष्य स्वतंत्र है, इस हद तक···वह आत्महत्या करे। वह आज़ाद है, अन्याय सहने के लिये, पाप भोगने के लिये, अपराध जानने के लिये, और तर्क पागल होने के लिये।

[तेजी में गयादत्त और पिताजी का प्रवेश।]

गयादत्त : सुनिये···सुनिये···फ़ौरन···!

विमल : (भयभीत, बीच ही में) ऐसा हुआ कि···ऐसा हुआ कि···बात यह हुई कि मिस्टर आत्मन न जाने क्यों बेहद गुस्से में थे। सबको गालियाँ बक रहे थे। आपको, मिस्टर राजन को, सबको भद्दी गालियाँ देते रहे। आप तो जानते ही हैं, कल हमें यहाँ से चार्ज देकर चले जाना है। हमें दुनिया भर से क्या मतलब। हमें चुपचाप आँख मूँदे अपने रास्ते पर

चले जाना है। कमिश्नर की 'बेसिक पे' ढाई हज़ार से शुरू होती है। इन्हें कम से कम ज्वाइन्ट सेक्रेटरी तक पहुँचना है। साढ़े तीन हज़ार तनख्वाह पर पहुँचकर ये रिटायर्ड होंगे। तब तक कम-से-कम ढाई लाख हमारा प्रॉविडेंट फंड होगा। इन्हें सात सौ रुपये महीने पेंशन मिलेगी, और आप जानते हैं, रिटायर्ड होने के बाद कोई घर पर नहीं बैठता। यह किसी फर्म में एक्जीक्यूटिव डाइरेक्टर, किसी बोर्ड के फाइनेंस एडवाइज़र, नहीं तो किसी यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर···

[इस बीच गयादत्त ने कई बार बोलने और विमल की बात काटने की कोशिश की है, उधर फ़ोन की घंटी बजकर चुप रह गयी है। विमल की साँस जैसे जवाब दे गयी है।]

गयादत्त : यह क्या बकवास, हमारे पास अब समय नहीं।

विमल : नहीं, नहीं, सुनिये तो···सुनिये तो··· मेरी बात सुनिये···!

गयादत्त : (क्रोध में) आप चुप रहिये··· !

[सन्नाटा]

गयादत्त : कहिए वकील साहब, केस खुदकुशी का है न ?

पिता : इस जगह गोली लगी है, और पिस्टल भी उसके दाएँ हाथ के पास पड़ी है। मुँह के बल गिरना दूसरा सबूत है।

गयादत्त : बाहर ड्यूटी पर खड़ा पुलिसमैन चश्मदीद गवाह है।

पिता : न कुछ बोलना, न कोई चीख-पुकार। यह भी सबूत है।

राजन : (चीखकर) हाँ, उसने आत्महत्या की। (तेज़ी से बाहर निकल जाना।)

[पीछे-पीछे गयादत्त और पिताजी जाते हैं।]

विमल : (प्रसन्न) उफ़ ! कितनी गर्मी है !

[प्रकाश बुझ जाता है। जैसे ही लौटता है, मंच पर बहुत कम प्रकाश है। टेबुल पर टेप रिकार्डर चल रहा है। सोफे पर मूर्तिवत राजन बैठे हैं। उनके सामने फाइल और अन्य कागज़ात हैं। टेप रिकार्डर से सहसा अजीबोगरीब किस्म की आवाज़ें आने लगती हैं। राजन तेज़ी से बढ़कर टेप बंद करते हैं।]

राजन : कौन ?

राजन : कौन हो तुम ?

राजन : कहाँ छिपा था ?

राजन : मेरे भीतर !

राजन : (हतप्रभ) चौदह वर्षों से ।

राजन : चोर···उचक्का···हँसता है, गोली से उड़ा दूंगा !

राजन : क्रिया के लिये आत्मविश्वास की जरूरत है ।

राजन : किसके सामने खड़ा है ?

राजन : अपने ।

राजन : बातूनी !

राजन : वही तो ।

राजन : कमरे को ज़रा भी गंदा किया तो··· खबरदार कागज़ पर हाथ लगाया··· कुर्सी छूना नहीं । कमरे की एक चीज़ भी इधर-उधर की तो···बदतमीज़···

राजन : कमरे का 'बैलेन्स' भी नहीं बिगाड़ सकते । अब देखो यह तसवीर । (दीवार पर टँगी तसवीर पर चाक से 'क्रॉस' मारता है ।)···क्या मूर्ति है ! सजावट के लिये जरूरी है मूर्ति का टूटा होना, क्यों ? इसके लिये कितनी कीमत चुकानी पड़ी ? याद भी कैसे रहता !

राजन : गेट आउट···गेट आउट !

राजन : तुझे अब तेरा यही सत्य बचा सकता है, और कुछ नहीं···कोई नहीं ।

राजन : चुप रह, बेशर्म !

राजन : लोग यही कहेंगे तुझे ।

राजन : तेरी ज़बान खींच लूँगा !

राजन : तू आगे कुछ नहीं बोल सकेगा ।

राजन : तू यहाँ से चला जा !

राजन : तुम्हीं तो कुछ ढूँढ रहे थे···! इसमें, इसमें···इसमें···इसमें···(दौड़कर फाइल को उलट देता है । कागज़ हवा में उड़ता है ।)

राजन : तेरी यह हिम्मत···बदतमीज़ !

[सोफे पर खड़ा हो गया है ।]

राजन : ···खुद हारकर, फिर अपने एक-एक अँग से लड़ने का नाटक । आत्मन से तेरा कोई सम्बन्ध नहीं । वह तुझसे तभी छुट गया, जब तू यहाँ घुसा । उसी के बाद ही मैं जन्मा हूँ । आत्मन, गयादत्त, राजन, केजरीवाल—सबसे अपने चारों ओर नकली लड़ाई का एक चक्रव्यूह···

राजन : मैं दिन-रात लड़ता रहा ।

राजन : (नीचे उतरता है ।) वही हारी हुई

लड़ाई ।

राजन : मैं इतनी ईमानदारी से काम करता रहा ।

राजन : सिर्फ वही व्यवस्था बनाये रखने का काम ।

राजन : और मेरी ताकत क्या थी ?

राजन : तभी बाहर निकल आते ।

राजन : मैं जिम्मेदार आदमी हूँ···

राजन : आदमी नहीं, केवल ज़िम्मेदार । (हँसता है ।) मैं प्रतिभावान व्यक्ति हूँ···सबमें विशेष हूँ···यहाँ तक कि नौकरी में भी विशेष···इसके आगे बुनियाद को ही भूल गये ।

राजन : मैंने कभी कोई बेइन्साफी नहीं की ।

राजन : इसके लिये हर क्षण खुद से बेइन्साफी की ।

राजन : दिन-रात अपने कामों में लगा रहा ।

राजन : किसी काम में अपने आपको पूरी तरह से नहीं झोंका···हर वक्त कुछ बचाकर इसी दिन के लिये रखे रहता था···पर ऐसा नहीं होता ।

राजन : सुन···सुन···!

राजन : अब तक बहुत सुन लिया···अपने उसी बचाव के लिये क्या-क्या तर्क,

कितने-कितने सिद्धान्त ।

राजन : ये तू कैसे कह सकता है ?

राजन : हाँ, तूने न्याय किये, अन्याय को छिपाने के लिये । अपराधी को दंड दिए, अपराध पर पर्दा डालने के लिये । खुदकुशी की, खुद को जिन्दा रखने के लिये ।

राजन : तब तेरी आस्था थी, स्वतंत्रता के बाद आज़ादी की लड़ाई शुरू होती है···

राजन : वह अब तक है ।

राजन : मेरे जन्म के साथ, तुझमें अब एक नया विश्वास पैदा हुआ है···आज समाज में केवल दो ही 'आइडिया' हैं, राजनीति और नौकरी···! तभी हर राजनीति नौकरी हो जाती है, और हर नौकरी राजनीति ।

राजन : मुझे छोड़ता है या नहीं ?

राजन : तेरे समय में जो कुछ भी हुआ है, सबकी ज़िम्मेदारी तुझ पर है ।

राजन : यह सरासर गलत है !

राजन : तुझे अपने अलावा और कुछ पता नहीं । इन वर्षों में क्या-क्या हुआ, तुझे यह केवल एक टेप मिली है ।

[बढ़कर टेप चला देना । उसमें से

अजीबोगरीब आवाज़ें, चीख-पुकार फैलती हैं। राजन दौड़कर मशीन बंद करते हैं।]

राजन : उसे कैसे बंद कर सकता है, जो मुझ पर 'रिकार्ड' हुआ है···यह देख, इसमें असंख्य ट्रैक्स···

[फिर मशीन चला देता है, और स्वयं न जाने किस भाषा में क्या-क्या बोलता रहता है। राजन टूटकर फर्श पर गिर पड़ते हैं।]

राजन : उठो···यहाँ आओ···बैठो···यह लो अपना त्यागपत्र, फाड़ दो। यह केस हारा हुआ है; स्वीकार करो। यह लो 'चार्ज सर्टिफिकेट फार्म'···इस पर दस्तख़त करो।

[राजन वैसा ही करते जा रहे हैं। धीरे-धीरे मंच का सारा प्रकाश बुझ जाता है। जैसे ही लौटता है, तो उसके साथ दिन जैसा तेज प्रकाश है, और उसमें डिनर से पूर्व का ऊँचा संगीत है। पिताजी मेहमानों से बात-चीत कर रहे हैं। विमल मिसेज राठौर के संग बातों में व्यस्त हैं।]

मि० राठौर : (विमल से) आपको यह साड़ी खूब मैच करती है।

विमल : आप अपने ब्लाउज़ किससे सिलवाती हैं ?

[दूसरी ओर]

गयादत्त : देखिये न···लोग आज़ादी की बात करते हैं। उन्हें इतना भी पता नहीं, कि इन्सान नीचे और नीचे ही धँसता चला जाता है, जैसे दरख्त की जड़ें···

पिता : अपनी खुराक के लिये धरती के नीचे और अंधकार में जाती रहती हैं।

कई लोग : जी···हाँ···बेशक···

एक पुरुष : आजकल कोई अच्छी फिल्म नहीं आ रही है।

एक स्त्री : एक अंग्रेज़ी फिल्म आयी है···'द फ्लाइंग सासर'···

कई लोग : 'द फ्लाइंग सासर' ! (हँसते हैं।)

विमल : मैंने अपनी उस आया को इसलिये निकाल दिया कि वह अँग्रेज़ी बिलकुल नहीं बोल पाती थी···

मि० राठौर : आजकल आपका वज़न कितना है ?

गयादत्त : वकील साहब, मेरे पास वक्त नहीं है, वरना···

पिता : सही है ! सही है !···अब डिनर का

वक्त हो गया।

एक पुरुष : मेरा ख़याल है, मिस्टर आत्मन राजनीति के आदमी नहीं थे···क्यों जनाब, आपने कभी किसी पॉलीटिशियन को ख़ुदकुशी करते सुना है ?

[पत्नी-सहित एक व्यक्ति का प्रवेश]

पिता : आइए, आइए, तशरीफ ले आइए···

गयादत्त : ओ हो पुरी साहब ! कहिए, आपके क्या हालचाल हैं ? आप तो इधर दिखे ही नहीं। यह आपकी मिसेज हैं ? क्या नाम है बेटी तुम्हारा ?

युवती : नानसेंस।

व्यक्ति : मिस्टर राजन से मिलने आया था···

गयादत्त : बस आ ही रहे हैं। हमारे देश में सुन्दरता की कोई कमी नहीं। अजी, औरत की तो बात ही छोड़िये, यहाँ के पेड़-पौधे कितने खूबसूरत हैं। वाह ! क्यों जनाब !

विमल : अन्दर जाइए न, वहाँ इंतज़ाम है।

गयादत्त : वकील साहब, यह क्या इंतज़ाम है ? आप तो जानते हैं, मैं कोई काम छिपकर नहीं करता। क्यों साहब, मैं कुछ गलत तो नहीं कह रहा ?

कई लोग : अजी, क्या बात है !

पिता : श्री, यहीं ले आना।

गयादत्त : जरा बड़ा वाला !···हाँ तो जनाब, मैं क्या कह रहा था ?

एक व्यक्ति : कुछ खूबसूरत के बारे में···

गयादत्त : हाँ, तो अर्ज़ यह कर रहा था, खूबसूरती भी क्या चीज़ है। जिसे खुदा दे, वह भी परेशान, जिसे न दे, वह भी परेशान···क्यों, क्या ख़याल है ?

[ट्रे में श्री गिलास ले आया है।]

पिता : महाशय जी, यह आपकी चौथी है। डाक्टर ने क्या कहा है ?

दूसरा व्यक्ति : खुदा आपकी यह सेहत कायम रखे··· उम्रदराज़ हो, अभी आपको मुल्क और इन्सानियत के लिये बहुत काम करने हैं।

गयादत्त : क्या, काम ? (हँसना) अजी, कौन साला काम करता है। काम तो अफसर लोग करते हैं। क्यों साहब ?

एक व्यक्ति : मिस्टर राजन अब तक नहीं दिखे !

गयादत्त : मिस्टर राजन ! भाई वाह, ऐसा आला अफसर इस जिले में अब तक कोई नहीं आया—'हो हैज ग्रेट फ्यूचर'··· हैं जी···बिलकुल !

दूसरा व्यक्ति : 'वी हैव ग्रेट रिस्पेक्ट' !

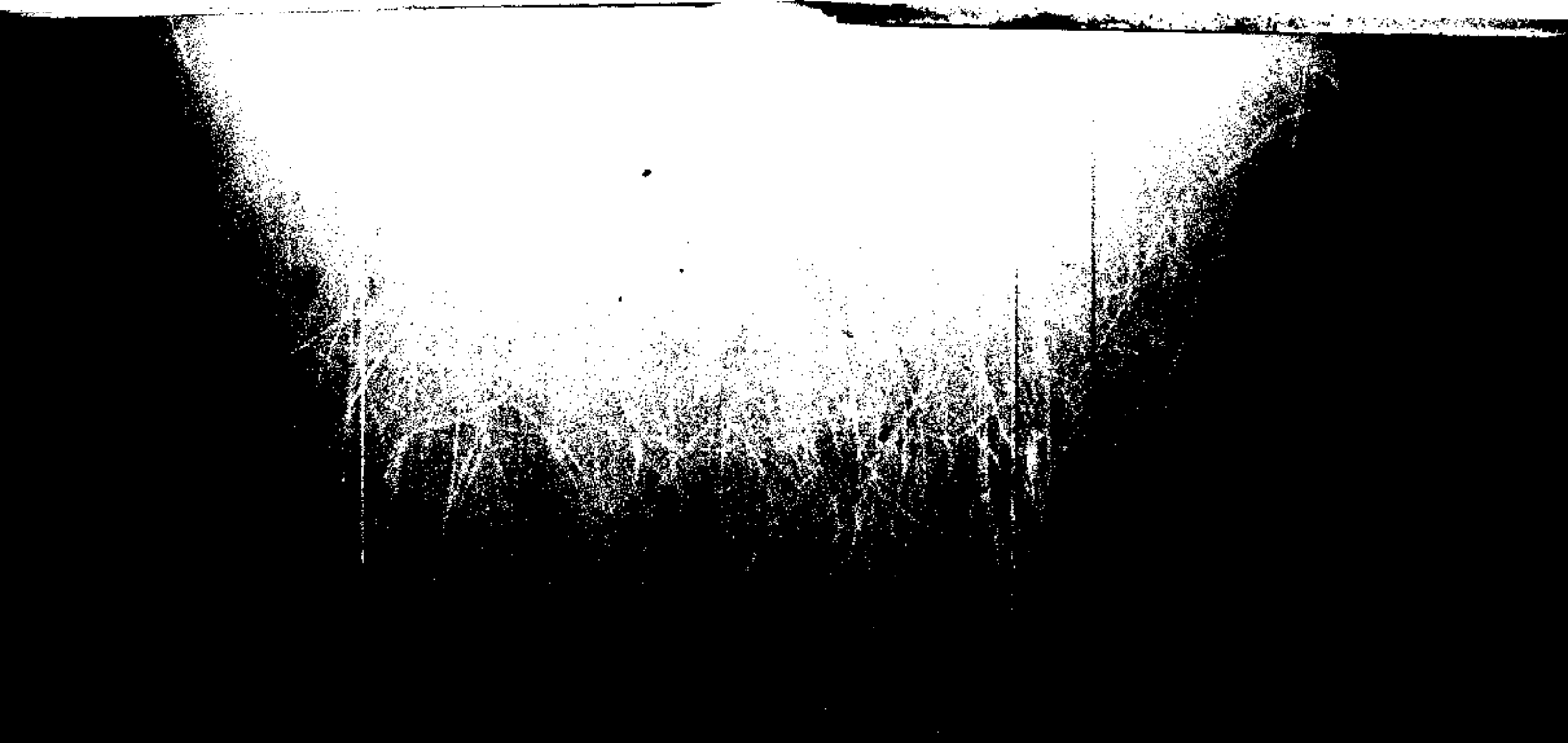

एक व्यक्ति : अजी क्या कहने हैं !

गयादत्त : भाई, अब राजन साहब को बुलाओ।

मि० राठौर : देखिये न, मेरे हसबैंड अब तक नहीं आए। दरअसल वह बड़े 'विजी' आदमी हैं।

एक स्त्री : उस दिन का 'फोक सांग' बड़ा मज़ेदार रहा।

दूसरी स्त्री : 'फाक्स सांग' मुझे भी बहुत पंसद है।

तीसरी स्त्री : शादी के पहले मैं भी गाती थी।

पिता : बस, राजन आते ही होंगे।

गयादत्त : आपसे मिलिये, राजन साहब के पिता जी।

पिता : बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर।

[भीतर से बड़ी संजीदगी और रोब के साथ राजन का प्रवेश। लोग उन्हें 'बधाई', 'मुबारकवाद', 'कांग्रेचुलेशन' कहते हुए घेर लेते हैं। राजन भीड़ में रुँधे हुए कुछ कह रहे हैं।]

राजन : थैंक्यू वेरी मच ! देखिये, मैं आप सब का हूँ। प्लीज !

गयादत्त : बस-बस, भाई, इधर आ जाओ। क्यों साहब, क्या हाल है ?

राजन : आप कहिए !

[गयादत्त मुंह में गिलास लगा सहसा

हँस पड़ता है। शराब के छींटे राजन के मुंह पर पड़ते हैं।]

राजन : यह क्या बदतमीज़ी है ! 'आई कांट टालरेट' ! यह क्या तमाशा है !

[लोग एक तरफ़ बातें कर रहे हैं, हँस रहे हैं, खा-पी रहे हैं। राजन बिलकुल अकेला छूट गया है। बढ़कर फोन करने में अपने को व्यस्त कर लेता है। डिनर का संगीत पूरे वातावरण पर छा गया है। पर्दा।]

यह नाटक और इसका प्रदर्शन

□ □

वीरेन्द्र नारायण

अभिमन्यु की पौराणिक कथा सर्वविदित है। महाभारत का यह शायद सबसे बेचारा चरित्र है जिसे महारथियों के खिलाफ अकेले लड़ना पड़ा, जिसे चक्रव्यूह में घेरकर मार डाला गया।

यह नाटक एक समानान्तर चित्र उपस्थित करता है। मिस्टर राजन भी घिर गया है और निर्धारित अंत सामने आता है जो एक साथ क्रूर और त्रासक है। वह मरता नहीं, उसकी तरक्की हो जाती है। लगता है अभिमन्यु की शहादत छीनकर उसे कृपाचार्य के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया गया।

लेकिन उसके दुश्मन कौन हैं ? जिन्हें हम रंगमंच पर देखते हैं— दोनों राजनीतिज्ञ, उसकी पत्नी, होस्टल में पढ़ने वाले उसके बच्चे या पिता जिन्होंने उसकी जीवनधारा निश्चित कर दी ? राजन बहुत प्रखर है और सब किसी को कठघरे में खड़ा कर जांचता-परखता है। पर इनके बीच गुस्से की भड़क भी दिखाई पड़ती है जिससे वह सारे बंधन तोड़ देना चाहता है। उसे अपनी नियति का पता है। शायद वह जानता है कि उसका अंत क्या है। इसीलिए जिनके जोर से वह भड़कता है उसी अनुपात में उसकी लाचारी उभरती है। बड़ी बेरहमी से यह स्पष्ट होता है कि गयादत्त की अवसरवादिता, आत्मन की सिद्धांतवादिता और राजन की चीख-पुकार हमारी आज की ज़िन्दगी के खोखलेपन का ताना-बाना प्रस्तुत करती है जिसमें विमल और श्रीमती राठौर के गुलबूटे जड़े

हैं। यह किसी योद्धा की त्रासदी नहीं जो लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त होता है। यह एक ऐसी लाश की त्रासदी है जो जीना चाहती है और अंततः महसूस करती है कि वह लाश ही है।

आप इसे त्रासदी कहेंगे ? आप ही पर यह छोड़ता हूँ।

जिस दिन 'मिस्टर अभिमन्यु' के पाठ के लिए गया था और जब नाटक का आखिरी प्रदर्शन हुआ इसके बीच का अरसा एक तरह के नशे में कटा। अब नशा उतरा-सा लगता है और लेखा-जोखा लेने बैठा हूँ।

दरअसल यह नाटक और इसके पात्र मुझे बहुत अपने-से लगे, अच्छी तरह जाने-पहचाने जिनसे लगातार मिलता-जुलता रहा हूँ, जिनके साथ रोज़ का उठना-बैठना है। और फिर लगा कि शायद आईना देखते समय रोज़ मिस्टर अभिमन्यु को तो नहीं देखता हूँ।

कथानक सीधा-सादा है। एक ईमानदार और आदर्शवादी युवक सरकारी नौकरी करता है। लेकिन आज का समाज, राजनीति उसे न ईमानदार रहने देती है और न आदर्शवादी। महाभारत के अभिमन्यु-सा वह घिर जाता है। डा० लक्ष्मीनारायण लाल ने इस समानान्तर में आगे बढ़कर जो कदम उठाया है वह अभिमन्यु की हत्या नहीं है। वह है अभिमन्यु की शहादत की हत्या। शायद महाभारत काल से लेकर आज तक हमारे विकास का यही प्रतीक है। महाभारत काल में शहादत मिल जाती थी। आज उसी की हत्या कर दी जाती है।

इसीलिए यह नाटक पहले ही पाठ में दिल में गड़ गया। नाटक का रिहर्सल प्रारम्भ हुआ। समस्या सामने आयी। अभिनय के दौरान में हर बार यह खतरा महसूस होता था कि नायक राजन दया का पात्र बनकर न रह जाय! इसके कई कारण थे। नाटक के मूल रूप का रिहर्सल करते समय यह एहसास होता था कि नाटक का नायक जैसे चक्रव्यूह से

निकलने की पूरी चेष्टा नहीं कर पाता। बहसें हुईं और लेखक ने कई अंश जोड़े। इस नये रूप में नाटक प्रदर्शित हुआ।

राजन दो राजनीतिज्ञों के बीच झूलता-सा रहता है पहले अंक में। एक ओर है आदर्शवादी आत्मन और दूसरी ओर 'सफल' गयादत्त। वह स्वभावतया आत्मन की ओर आकृष्ट होता है, गयादत्त से घृणा करता है। जब 'मंत्रीजी' के दबाव से वह मजबूर होता है तो प्रतिक्रियास्वरूप और सख्ती बरतता है गयादत्त के पिट्ठू केजरीवाल के साथ। वार का जवाब इस तरह एक बार से वह देता है लेकिन घिरते हुए चक्रव्यूह से निकलने की चेष्टा भी करता है। उसकी पत्नी आज भी उसके साथ है लेकिन सहसा उसे लगता है कि सहारा उसे वहाँ भी नहीं मिल सकता क्योंकि उसकी पत्नी अब 'माहौल', 'तरीका' आदि बन्धनों से जकड़ी हुई है। पहले की तरह वे झगड़ भी नहीं सकते। पहले की तरह एक युवक और युवती की हैसियत से दीन-दुनिया भरमाकर एक-दूसरे में खो नहीं सकते, चाहते हुए भी एक-दूसरे की कोई मदद नहीं कर सकते क्योंकि दोनों दो धरातल पर जी रहे हैं और सेक्स भी जो उन्हें आसानी से घसीट कर एक जगह ला सकता था कहीं पीछे छूट गया है।

पहला अंक जब समाप्त होता है तो स्पष्ट लगता है एक ओर पत्थर की मजबूत दीवार बन गई है और उस तरफ निकल जाने की कोशिश करना पत्थर से सिर टकराना है।

दूसरे अंक में राजन दूसरी ओर निकल भागने की कोशिश करता है। विचारों की दुनिया में जीने का रास्ता अपनाया जा सकता है। इस बात पर 'इस्तीफा देकर आत्मसम्मान बचाया जा सकता है। लेकिन दोनों राजनीतिज्ञों को, पत्नी और उसके बहाने समाज की मान्यताओं को तौल कर वह देखता है कि 'हर विश्वास जेलखाना है, हर मूल्य किलेबन्दी है।' दूसरी ओर भी दीवार सामने आती है। यह रास्ता भी सदा के लिए बन्द हो जाता है।

दूसरे अंक के अंत में जब गयादत्त आत्मन की हत्या कर देता

राजन के बंगले के अहाते में तो उसे एहसास होता है कि हत्यारा वही है; क्योंकि उसके भीतर भी एक आत्मन और एक गयादत्त था। और उसके भीतर भी आत्मन की हत्या गयादत्त ने कर दी। उस समय भी वह कह सकता था—गयादत्त ने आत्मन की हत्या की। शायद तब उसे शहादत मिल जाती। लेकिन तभी उसे पत्नी का स्वर सुनाई पड़ता है। ढाई लाख प्राविडेंट फंड, दोनों बच्चों की शादी, रिटायर होने के बाद किसी फर्म का एक्जिक्यूटिव डायरेक्टर, किसी यूनिवर्सिटी का वाइस चांसलर आदि! और उसे भी गयादत्त के स्वर में स्वर मिलाकर कहना पड़ता है कि आत्मन ने आत्महत्या की। इस तरह तीसरी दीवार पूरी होती है। इसके तुरन्त बाद विदाई पार्टी के दृश्य में जब वह गयादत्त के स्वर में स्वर मिलाकर आत्मन की चर्चा करता है और संदेश देता है, विदाई संदेश—'मैं आप लोगों का ही हूँ' तो चारों दीवारें पूरी हो जाती हैं।

नाटक सदा-सर्वदा दो स्तरों पर चलता है। एक समस्या सरकारी नौकरी की है, दूसरी समस्या उस व्यक्ति की है। सरकारी नौकर की समस्या में चीखना-चिल्लाना है, नाटकीयता है। आसानी से समझ में आती है और दिखाई पड़ती है। व्यक्ति की समस्या में विश्वास और मूल्यों पर चोट पड़ती है, उनका पर्दाफाश होता है। शायद हिन्दी नाटक में अभी यह स्वाद अजाना है इसलिए खुश्क आंखों पर शक किया जाता है और यह याद नहीं रहता कि यूँ भी आँसू बहाये जाते हैं।

इस नाटक के स्वाद को तीखा बनाने के लिए मैं जो दृश्य-बंध काम में लाया उसमें राजन के कमरे की दो दीवारें और उनके बीच का कोना दिखाई पड़ता था। इस तरह दर्शकों के सामने था रंगमंच की सतह का त्रिभुजाकार हिस्सा। एक दीवार में बाहर का दरवाज़ा और मेंटलपीस था। दूसरी दीवार में फुलवारी और बेडरूम के दरवाज़ों के बीच खिड़की भी जिससे फुलवारी का कुछ हिस्सा भी दिखाई पड़ता था। मेंटलपीस के ऊपर एक चित्र था। कमरे की दीवारों का रंग मैंने ऐसा

रखा था कि जो भूरे और काले के बीच का कहा जायगा। पर्दे भी मिलते-जुलते थे। दिल्ली-प्रवास ने यह दिखाया है कि जो सुविधाएँ सरकारी तौर पर मिलती हैं उनका सरकारी क्वार्टरों से अच्छा उपयोग होता है। गाँठ के पैसे कम निकाले जाते हैं। इसलिए फुलवारी बहुत शानदार रखी थी। इस दृश्य-बंध का यह फायदा था कि दर्शकों का ध्यान बिखर नहीं जाता था और राजन, आत्मन तथा गयादत्त के त्रिकोण के अनुरूप दृश्यात्मक रूप से एक त्रिकोण सामने आता था।

अभिनय के स्तर पर भी मुझे कई प्रयोग करने पड़े। राजन के जीवन का, समाज की मान्यताओं का खोखलापन दिखाने के लिए मैं राजन और उसकी पत्नी के कई अंशों में फिल्मी कम्पोजीशन भी काम में लाया ताकि उनकी शारीरिक निकटता के बावजूद उनके अस्तित्व के धरातल की बाधक पंक्तियाँ और तीखी लगें। राजन और उसकी पत्नी विमल की उस त्रासदी की परिणति-स्वरूप मैंने विमल की गोद में लेटे हुए राजन से कहलाया—यही नरक है। एक की जरुरियात को दूसरा पूरा करे, दूसरे की दी हुई लड़ाई को सत्य मानकर आजीवन उससे जूझता रहे। इसीलिए जब पहले अंक में तड़पकर राजन विमल के पास जाता है तो विमल बड़े प्यार से कहती है—'आदमी अपनी जगह से इसलिए भागना चाहता है कि वह अपने को स्वयं से बड़ा साबित करना चाहता है।' नाटक में ऐसे स्थलों की कमी नहीं जहाँ विमल और राजन एक-दूसरे को कोस सकते हैं और तानेकशी कर सकते हैं। तब सतही नाटक उभरता जो शायद दिल्ली के पत्र-पत्रिकाओं के आलोचकों को प्रिय है। लेकिन उस हालत में सिर्फ पति की समस्या सामने आती। पति और सरकारी नौकरी के भीतर जो व्यक्ति है वह छूट जाता।

आत्मन और गयादत्त के अयथार्थवादी दृश्य में प्रकाश-व्यवस्था के चमत्कार के बदले मैंने दोनों की आवाज रंगहीन कर दी थी। कभी-कभी दोनों इसी तरह की मशीनी और उतार-चढ़ावहीन स्वर में एक साथ भी बोलते थे। सिर्फ राजन अपने सहज स्वाभाविक स्वर में बातें करता था

राजन के व्यक्तित्व का निरूपण ही सबसे कठिन समस्या थी। उसे कई स्तरों पर एक साथ जीना पड़ रहा था। सरकारी अफसर की तरह वह गर्वीला था, रोबदारवाला और अधिकारपूर्ण ! इस हैसियत से वह डांटता था, गयादत्त जैसे सफल राजनीतिज्ञ को भा 'शट-अप' कह सकता था। पति की हैसियत से उसके और विमल के अंशों में मैंने एक तरह का हल्कापन, ऊपर से लादी गई और ली गई चंचलता भरी थी जो एक तरफ तो उसके असंतोष तो दूसरी तरफ खोखलेपन को उभारती थी। उसके व्यक्ति की जो प्रतिक्रियाएँ और उपलब्धियाँ थीं उन क्षणों में शारीरिक रूप से मैंने उसे निश्चल कर दिया था ताकि वे पंक्तियाँ एक प्रकार की निर्वैयक्तिकता पा सकें, राजन के मुँह से सभी पर लागू होने वाले सत्य की सफल अभिव्यक्ति बन सकें। इसका यह अर्थ नहीं कि उन पंक्तियों को कहते समय अभिनय की सघनता में किसी प्रकार की कमी की गई थी ; बल्कि सच पूछा जाय तो अभिनय की दृष्टि से वे सघनतम क्षण थे जिसमें अभिनेता भाव-भंगिमा और अंग-संचालन की परिधि से बाहर निकलकर अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को पंक्तियों में डुबो देना चाहता है।

यह तीसरा स्तर लोगों के लिए भारी पड़ा। शायद अनुभूति की इस गहराई से परिचय न रहा हो अथवा इस धरातल की कल्पना न हो। लेकिन चारा भी क्या था ! मेरे लिए तो इस नाटक का यही कटु सत्य ही सबसे बड़ा आकर्षण था जिस कारण मैंने इसका निर्देशन अपने हाथ में लिया। मेरे लिए तो यही धरातल असली धरातल था जिस कारण पत्नी की गोद में लिटाकर पति के मुँह से कहलाया—यही नरक है। मेरे लिए तो यही नाटक था जिसमें विश्वास और मूल्य टूटते और बनते हैं। मुझे संतोष और गर्व है कि मेरे पात्रों ने इसे समझा। मेरे दर्शकों पर भी इसकी पंक्तियाँ जीवित हो उठीं। जिन्होंने नहीं समझा और अपने भीतर झाँकने के बदले पत्र-पत्रिकाओं के पन्नों में झाँकने लगे उनके लिए वह शेर याद आता है :

ज़रा उनकी शोखी तो देखिये लिए जुल्फ-खम-शुदा हाथ में
मेरे पीछे आए दबे-दबे, मुझे सांप कहके डरा दिया !

बस उनकी शोखियाँ देखता हूँ और जो जुल्फ-खम-शुदा को साँप समझकर देखते तथा डर जाते हैं उनकी तबीयत की दाद देता हूँ। बेचारे करें भी क्या ! अंग्रेजी के माध्यम से हिन्दी समझना मुश्किल काम है।

●